।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **प्रथम खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – नवतत्त्व सार्थ)

प्रश्न १. अ. जोड लगाइए। **(५)**

अ स्तंभ		**ब स्तंभ**
१. स्पर्शेन्द्रिय प्राण	–	अ. संवर
२. आठ कर्मों का समूह	–	ब. खाना
३. आस्त्रव का निरोध	–	क. छूने की शक्ति
४. अशन का अर्थ	–	ड. पुण्डरीक
५. अजिन सिद्ध	–	इ. कार्मण शरीर

ब. मैं कौन हूं, पहचानिए। **(५)**

१. दुष्ट वचन सुनकर भी मैं समभाव में रहता हूं।
२. अनित्य भावना को मैंने अपनाया था।
३. मेरा स्वभाव चित्रकार के समान है।
४. मैं धर्म का मूल हूं।
५. मैं अशरीरी हूं।

क. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। **(५)**

१. शुभ उपयोग का अभाव ..... है।
२. लोभ न करना ..... कहलाती है।
३. ..... का अर्थ ही त्याग होता है।
४. ..... से ही मोक्ष मिलता है।
५. आगम को ..... कहा है।

प्रश्न २. निम्नलिखित तक्ता पूर्ण कीजिए। **(१०)**

नाम	**गति**	**जाति**	**काया**	**प्राण**
जैसे – संज्ञी मनुष्य	**मनुष्य**	**पंचेन्द्रिय**	**त्रस**	**१०**
१. तोता	.....	.....	.....	.....
२. हीरा	.....	.....	.....	.....
३. ७वीं नरक का जीव	.....	.....	.....	.....
४. चींटी	.....	.....	.....	.....
५. २रे लोकान्तिक के देवता	.....	.....	.....	.....

P.T.O

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ४ सवालों के जवाब दीजिए। **(२०)**

१. पुण्य किसे कहते हैं? पुण्य की प्रकृतियों को बताकर पुण्योपार्जन के कारण बताइए।

२. पच्चीस क्रिया में से किन्हीं पांच क्रियाओं को स्पष्ट कीजिए।

३. गुप्ति किसे कहते हैं? उसके भेदों को स्पष्ट कीजिए।

४. आभ्यंतर तप के भेदों को स्पष्ट कीजिए।

५. संहनन के भेदों को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब दीजिए। **(१५)**

१. निम्न गाथा का भावार्थ लिखकर उसे विस्तार से समझाइए।

परिणामी जीव मुत्तं सपएसा एग खित्त किरिया य।
णिच्चं कारण कत्ता, सव्वगय इयर अप्पवेसे।।

२. सिद्ध का स्वरूप और उसके भेदों का वर्णन कीजिए।

(खण्ड ख – जैनत्व की झांकी)

प्रश्न ५. सही है या गलत बताइए। **(५)**

१. बारहवें तीर्थंकर की निर्वाण भूमि चंपानगरी है।

२. ईश्वर चेतन है और जीव भी चेतन है।

३. जैन कोई जाति नहीं, धर्म है।

४. दान धर्म सबसे छोटा धर्म है।

५. कर्म की गति बडी टेढी है।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. सम्यक् दर्शन	२. तीर्थंकर	३. आत्मा
४. तत्त्व	५. संवर	६. धर्म

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब दीजिए। **(१०)**

१. भ.ऋषभदेव के पारणे का दिन अक्षय तृतीया के नाम से क्यों मनाया जाता है?

२. कालवाद को स्पष्ट कीजिए।

३. त्रिपदी को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से दीजिए। **(१५)**

१. मांसाहार का निषेध क्यों किया गया है, बताइए।

२. 'वनस्पति में जीव है' इसे स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **प्रथम खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – संस्कृत सुनिधि भाग – १)

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित रूपों को पहचानिए। **(१०)**

रूप	मूल शब्द/धातु	विभक्ति/पुरुष	लिङ्ग/लकार	वचन
१. क्षालयेतम्				
२. श्रद्धालवः				
३. असीव्यम्				
४. ग्लावम्				
५. एभ्यः				

प्रश्न क्र. २. अ. निम्नलिखित वर्णों के उच्चारणस्थान और आभ्यंतर प्रयत्न लिखिए। **(५)**

१. ण् २. थ् ३. औ ४. भ् ५. ऋ

ब. निम्नलिखित हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए। **(५)**

१. मेहमान प्रतिदिन खजाने से धन ले जायेगा।

२. सभी छात्रों के लिये ये किताबें हैं।

३. इस प्रतिमा को मैं देखता हूं।

४. तुम उस नगर से यहां आये।

५. श्रोता प्रवचन को सुने।

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के यथोचित जवाब लिखिए। **(१५)**

१. 'महाजनस्य सम्पर्कः ..... ' सुभाषित को शुद्ध लिखकर उसका भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

२. समय की पहचान के नियम लिखकर, अपने द्वारा निर्मित उदाहरण लिखिए।

३. सर्वनाम किसे कहते हैं? 'एतद्' सर्वनाम के तीनों लिङ्गों में रूप लिखिए।

४. 'सम्यक् निर्णयः' कथा का सार अपनी भाषा में लिखिए।

५. निम्नलिखित संख्याओं को संस्कृत में लिखिए।

अ. ५६ आ. २९ इ. ७८ ई. ९५ उ. ६२

ऊ. १४ ऋ. ४३ ए. ६ ऐ. ८७ ओ. ३१

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. अव्यय के स्वरूप का संक्षेप में वर्णन करके निम्नलिखित अव्ययों से संस्कृत में वाक्य बनाइए।

१. सर्वत्र २. तूष्णीम् ३. यतः ४. अहो! ५. आम् ६. नक्तम्

P.T.O

७. भृशम् ८. ऋते ९. समीचीनम् १०. तथापि

२. संस्कृत वर्णमाला का परिचय देते हुए निम्नलिखित संधियों का विच्छेद कीजिए।

१. विस्मरन्तीह २. आत्मौपम्येन ३. ततोऽधिकम् ४. ह्येकेन ५. चोपसेवते
६. उपोषति ७. मुक्ताफलाश्रियम् ८. नाश्नात्युपानहम् ९. ऊहापोहः १०. नरावुदारौ

(खण्ड ख – तत्त्वार्थ सूत्र)

प्रश्न ५. अ. सही है या गलत बताइए। **(५)**

१. मनुष्य लोक से बाहर के सब ज्योतिषी देव अस्थिर है।
२. सत्य की प्रतीति को सम्यक् चारित्र कहते हैं।
३. कर्म के अनुदय को क्षायिक भाव कहते हैं।
४. नारक और देवों का उपपात जन्म होता हैं।
५. अध्यवसाय विशेष को लेश्या कहते हैं।

ब. मैं कौन हूं, पहचानिए। **(५)**

१. अप्राप्त वस्तु के प्राप्ति के लिए मैं संकल्प करता हूं।
२. बिना दी हुई किसी की वस्तु को मैं ग्रहण करता हूं।
३. संपूर्ण कर्मों का क्षय होनेपर मैं प्राप्त होता हूं।
४. मैं मन, वचन और काय की प्रवृत्ति हूं।
५. मैं ज्ञान प्राप्ति में विघ्न डालता हूं।

प्रश्न ६. अ. भेद बताइए । (कोई ३) **(६)**

१. आभ्यंतर तप २. बन्ध ३. अन्तराय कर्म ४. दर्शनोपयोग

ब. निम्नलिखित किन्हीं २ सूत्र का अर्थ लिखिए। **(४)**

१. समनस्काऽमनस्काः २. न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ३. पीतान्त लेश्याः

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. अवधिज्ञान और मनःपर्यवज्ञान में किसकी अपेक्षा से अंतर है, स्पष्ट कीजिए।
२. असातावेदनीय कर्म का आश्रव कितने कारणों से होता है, बताइए।
३. जीवरूप अधिकरण को सूत्र के आधार से स्पष्ट कीजिए।
४. ९ ग्रैवेयक देवों की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति बताइए।
५. जन्म के कितने प्रकार हैं? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. तीसरे अध्ययन का सार लिखिए।
२. दसवें अध्ययन का सार लिखिए।

॥ ॐ अर्हन्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **द्वितीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – संस्कृत सुनिधि भाग – २)

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित सन्धियों का विच्छेद कीजिए और सन्धि का नाम लिखिए। **(५)**

१. चिन्मयम् २. पयोधिरुदरं ३. उच्छेदः

४. जानन्नपि ५. जडवल्लोकः

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित शब्दों / धातुओं के यथानिर्दिष्ट रूप लिखिए। **(५)**

मूलशब्द/धातु	लकार/लिङ्ग	विभक्ति/पुरुष	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
१. स्निह्	–	षष्ठी विभक्ति			
२. ओहाक्	लङ्, परस्मै.प.	उत्तम पुरुष			
३. यत्	लृट्, आत्मने.प.	प्रथम पुरुष			
४. रत्नमुष्	–	सप्तमी विभक्ति			
५. मरुत्	–	तृतीया विभक्ति			

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित सवालों के जवाब संक्षेप में लिखिए। (कोई ५) **(१०)**

१. 'सभाभवने त्रीणि चित्राणि सन्ति' इस वाक्य में विशेषण, विशेष्य कौन–से हैं और विशेषण किस प्रकार का है?

२. 'चित्' प्रत्यय 'किम्' शब्द के आगे लगाने पर कौन–सी सन्धि होती है? सोदाहरण लिखिए।

३. तुदादि गण का विकरण क्या है और उसकी धातु की विशेषताएं क्या है?

४. प्रत्याहार किसे कहते हैं? 'झश्' प्रत्याहार में आनेवाले वर्ण लिखिए।

५. विसर्ग का लोप कहां–कहां होता है? सोदाहरण लिखिए।

६. सन्धि किसे कहते हैं? उसके कितने भेद हैं?

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं तीन सवालों के यथोचित जवाब लिखिए। **(१५)**

१. 'भवन्ति नम्रास्तरवः ..... ' सुभाषित को शुद्ध लिखकर उसका अन्वय एवं हिन्दी में भावार्थ लिखिए।

२. निम्नलिखित संवाद को पूर्ण कीजिए।

काकः – ..... (युष्मद्) कः असि?

पिकः – अहं पिकः ..... (अस्, लट्)।

काकः – त्वं किं ..... (कृ)?

पिकः – अहं ..... (कूज्)

काकः – त्वं कुत्र ..... (कूज्)?

P.T.O

पिकः – अहं ..... (आम्रवृक्ष) कूजामि।

काकः – त्वम् अपि कृष्णः ..... (अस्मद्) अपि कृष्णः। अत्र कः भेदः ?

पिकः – भेदः प्रत्यक्षं ..... (भू, लृट्)।

काकः – तत् कथम् ?

पिकः – अहं मधुरं कूजामि । परं त्वं तु सदैव 'का–का' एव ..... (कृ)। तव ध्वनिः ..... (मधुर) नास्ति।

काकः – कथं विस्मरसि ? अहं प्रतिदिनं ..... (सुप्त) जागरयामिः।

पिकः – एतत् कार्यं तु ..... (घटिका) अपि करोति।

काकः – अलं ..... (विवाद) । परस्परं स्नेहः कर्त्तव्यः।

पिकः – भवतु आवाम् ..... (मित्र) स्वः।

३. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

अ. उसकी आखों से अश्रु गिरे।

आ. तुम सब अपने कर्म काटो।

इ. मैं भूखा हूं, परन्तु, मांसाहार नहीं करूंगा।

ई. मेरे अविनय को माफ कीजिए।

उ. धनिक लोग विपत्ति में निर्धनों की सहायता करते हैं।

४. 'पुर्, दिश्, मथिन्' शब्दों के अथवा 'ज्ञा' (परस्मै. प.) के सभी लकारों में रूप लिखिए।

५. 'सत्यस्य विजयः' कथा के भाव अपनी भाषा में लिखिए।

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. विभक्ति किसे कहते हैं ? उसके भेदों को बताकर चतुर्थी एवं षष्ठी उपपद विभक्तियों के नियमों को स्वनिर्मित उदाहरणों के द्वारा लिखिए।

२. व्यञ्जन सन्धि किसे कहते हैं ? उसके सभी भेदों का संक्षेप में, सोदाहरण वर्णन कीजिए।

(खण्ड ख – सुबोध प्राकृत व्याकरण भाग – १)

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित शब्दों के लिए प्राकृत शब्द लिखिए। **(५)**

१. दुर्लभ	२. संयम	३. सत्य
४. काश्यपः	५. रिपु	

प्रश्न क्र. ७. जोड लगाइए। **(५)**

अ स्तंभ		**ब स्तंभ**
१. वणोलि	–	अ. प्रकृतिभाव
२. मुणीसरो	–	ब. गुण संधि
३. तहत्ति	–	क. विकृत संधि
४. इमेयारूवे	–	ड. दीर्घ संधि
५. विलयेसा	–	इ. अव्यय संधि

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किन्हीं पांच पदों की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. अल्पप्राण २. सम्बोधन ३. सर्वनाम

४. विशेष्य ५. सरल व्यंजन ६. काल

प्रश्न क्र. ९. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१५)**

१. 'धुत्तो सियालो' कहानी का सार लिखते हुए उससे मिलने वाली शिक्षा लिखिए।

२. सर्वनाम का परिचय देते हुए 'युष्मद्' शब्द के रूपों को लिखिए।

३. व्यंजन सन्धि का स्वरूप अपनी भाषा में सोदाहरण लिखिए।

४. निम्नलिखित वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए।

अ. मैं गुरु को वंदन करता हूं।

आ. तुम सबने जल पीया।

इ. दो छात्र वहां जायेंगे।

ई. लोग धर्म को सुने।

उ. हम सब पढते हैं।

५. 'चल' धातु के सभी लकारों में रूप लिखिए।

प्रश्न क्र. १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. धातु की विशेषताओं को लिखकर सर्वनाम का परिचय दीजिए।

२. संयुक्त व्यंजन परिवर्तन के नियमों को सोदाहरण लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **द्वितीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन १ से ५)

प्रश्न १. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तम्भ		'ब' स्तम्भ
१. चार अंग	–	अ. अडियल घोडा
२. तीव्र प्यास	–	ब. अनंत बार
३. अविनीत शिष्य	–	क. विनय
४. शांति का मूल मंत्र	–	ड. मनुष्य भव
५. अकाम मरण	–	इ. पिपासा परीषह

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. कोई भी ५ परिषह को स्पष्ट कीजिए।

२. निम्नलिखित गाथा का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

अहकालम्मि संपत्ते, आघायाय समुस्सयं।
सकाममरणं मरइ तिण्हमण्णयरं मुणी।।

२. असंस्कृत किसे कहते हैं, स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. विनय अध्ययन का सार अपनी भाषा में लिखिए ।

२. तृतीय अध्ययन का सार अपनी भाषा में लिखिए।

(खण्ड ख – जैन तत्त्व दीपिका)

प्रश्न ४. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। **(५)**

१. निगोद को ..... कहते हैं।

२. ..... नामकर्म के उदयवालों को देवता कहते हैं।

३. परमाणुओं के बन्ध को ..... कहते हैं।

४. ..... के समूह को वर्गणा कहते हैं।

५. संसार, देह, भोग, इनका भय और मोक्ष की अभिलाषा को ..... कहते हैं।

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. वचनयोग २. भाषा पर्याप्ति ३. मोहनीय कर्म

P.T.O

४. मिथ्यादृष्टि ५. व्यवहार सम्यक्त्व ६. प्रत्यभिज्ञान

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. प्रत्यक्ष प्रमाण किसे कहते हैं, उसके भेदों को स्पष्ट कीजिए।

२. सामान्य गुणों के मुख्य छह गुणों को स्पष्ट कीजिए।

३. जैन मुनियों का रहन-सहन और आचार-व्यवहार किस तरह का होता है?

४. मनोरथ का तीसरा भेद किस प्रकार का है?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. गुणस्थान किसे कहते हैं, उसके भेदों को स्पष्ट कीजिए।

२. सम्यक्त्व किसे कहते हैं, उसके भेदों को बताकर सम्यक्त्व की १० रुचियों को स्पष्ट कीजिए।

(खण्ड ग – इतिहास के उज्ज्वल पृष्ठ)

प्रश्न ८. अ. अंकों में जवाब दीजिए। **(५)**

१. आ. अभयदेव द्वारा रचित जयतिहुण नामक स्तोत्र में कितने श्लोक हैं?

२. आ. हेमचन्द्र कौनसी उम्र में आचार्य पद पर आसीन हुए?

३. प्रभुवीर पट्टावली के अनुसार धर्मदासजी महाराज के कितने शिष्य हुए?

४. आ. अमोलकऋषिजी म. ने आगम के अतिरिक्त कितने पुस्तकों का सम्पादन और लेखन किया?

५. पार्श्वनाथ भगवान को दीक्षा के कितनी रात्रियों के पश्चात् केवलज्ञान हुआ?

ब. नीचे दिए हुए महापुरुषों ने किसके पास दीक्षा ग्रहण की बताइए। **(५)**

१. आ. सिद्धसेन दिवाकर

२. आ. अभयदेव सूरी

३. आ. हेमचन्द्र

४. आ. आनन्दऋषिजी म.सा.

५. आ. लवजीऋषिजी म.सा.

प्रश्न ९. निम्नलिखित सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. उत्सर्पिणी काल के छह भागों के नाम बताइए।

२. भ. ऋषभदेव ने भरत, बाहुबली, ब्राह्मी और सुंदरी को कौनसी कलाएं सिखायी?

३. भ. विमलनाथ की जन्मभूमि, निर्वाणभूमि और माता-पिता का नाम बताइए।

४. सोमिल ब्राह्मण ने जो विराट् यज्ञ का आयोजन किया था उसमें कितने वेदविद् ब्राह्मण आये थे उनके नाम बताइए।

५. आचार्य जिनभद्रगणी के कोई भी ६ रचनाओं के नाम बताइए।

प्रश्न १०. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. आ. आनंदऋषिजी म. के जीवन को संक्षिप्त में बताइए।

२. भगवान पार्श्वनाथ ने नाग को कैसे बचाया?

३. देवपाल राजा ने आ. सिद्धसेन दिवाकर को 'दिवाकर' उपाधि से विभूषित क्यों किया?

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **प्रथम खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – संस्कृत सुनिधि भाग ३)

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए। **(५)**

१. विद्या से रहित छात्र सभी ओरसे पराजित होता है।

२. नेतृत्व करनेवाला बालक को रास्ता पूछता है।

३. खाते हुए बालक का पाकिट चोर चुराता है।

४. आपके जैसी कथा मैं नहीं लिख सकती।

५. हम दोनों ने आज सुबह घर खरीदा।

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सामासिक पदों का विग्रह करके समास का नाम लिखिए। **(१०)**

१. अग्निशलाका	२. अकल्पितम्	३. रङ्गुननगरम्
४. यथाशक्ति	५. नवरसम्	६. पत्रपुष्पफलम्

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित किन्हीं दो सवालों का यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. भवती मलया। भवत्याः भगिनी दशम्यां कक्ष्यायां देशे प्रथमस्थानं प्राप्नोति। तस्याः अभिनन्दनार्थं पत्रं लिखेत्।

२. 'ऐश्वर्यस्य विभूषणं.....' सुभाषित को शुद्ध लिखकर उसका अन्वय एवं हिन्दी भावार्थ लिखिए।

३. 'दया सर्वेषु प्राणिषु' कथा का सार एवं उससे प्राप्त शिक्षा को अपने शब्दों में लिखिए।

४. 'लिट् लकार' का स्वरूप लिखकर स्वनिर्मित तीन उदाहरण लिखिए।

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. कृदन्त के भेदों का संक्षेप में परिचय देते हुए निम्न कृदन्त पदों से संस्कृत में वाक्य तैय्यार कीजिए।

१. वाचकः	२. दर्शनम्	३. पाकः	४. ज्ञातृ
५. तृप्तिः	६. कथितव्यः	७. क्रुद्धः	८. अर्चितवान्
९. करणीयः	१०. क्रीडित्वा	११. प्रणम्य	१२. शयितुम्

२. वाच्य किसे कहते हैं? उसके सभी प्रकारों का स्वनिर्मित उदाहरणों से वर्णन करते हुए द्विकर्मक में कर्मवाच्य की व्यवस्था कैसे है, लिखिए।

(खण्ड ख – सुबोध प्राकृत व्याकरण भाग – २)

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित कृदन्त शब्द किस कृदन्त के हैं लिखिए। **(५)**

१. दाउं २. भणियं ३. लेहणीयं ४. भणिऊणं ५. जाणन्तं

P.T.O

प्रश्न क्र. ६. वाच्य परिवर्तन कीजिए। **(५)**

१. सो नाय–नीईए रज्जं करेइ। २. मुणि तं कज्जं करेइ।

३. माया भोयणं पयइ। ४. मए सच्चं वुच्चीअ।

५. भिगुरिसिणा वुत्तं।

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित किन्ही पांच सवालों का संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. हेत्वर्थ कृदन्त किस विभक्ति के बदले में आता है? उसके लिए कौन–सा प्रत्यय आता है?

२. सर्वनाम से कौन–से प्रत्यय जुडने पर अव्यय बनते हैं और वे किस प्रकार के होते हैं?

३. भाववाच्य में कौन–सी धातु होती है और उसमें कर्ता में कौन–सी विभक्ति होती है?

४. व्याकरणिक विश्लेषण किसे कहते हैं? उसमें 'अनि' शब्द का अर्थ क्या है?

५. कर्मवाच्य में किसकी प्रथमा होती है और किसमें तृतीया होती है?

६. प्रत्यय किसे कहते हैं? धातु से कितने प्रत्यय आते हैं, कौन–से?

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किन्हीं चार सवालों के यथोचित जवाब लिखिए। **(२०)**

१. ऋकारान्त शब्द किसे कहते हैं? प्राकृत में उनके स्थानपर क्या आदेश होते है लिखकर 'स्वसृ' (ससा) शब्द के रूप लिखिए।

२. 'धन्नो भारह– मायाए सुपुत्तो' कथानक को हिन्दी में बताते हुए आपने उससे क्या सिखा लिखिए।

३. सर्वनाम किसे कहते हैं? उसका परिचय देते हुए 'किं'(पु.) शब्द के रूप लिखिए।

४. 'वर्तमान कृदन्त' का परिचय देते हुए स्वनिर्मित उदाहरण लिखिए।

५. निम्न गाथा का व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए।

'तिण्णो हु सि अण्णवं महं, किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ।
अभितुर–पारं गमित्तए, समयं गोयम मा पमायए।।'

४. कृदन्त शब्दों के प्रयोग से प्राकृत में अनुवाद कीजिए।

१. खाते हुए बालक को यहां लाओ। २. किताब देखकर आनंद होता है।

३. माता पढने के लिए आती है। ४. सूत्र का अर्थ जानना चाहिए।

५. पात्र दूध से भरा है।

(खण्ड ग – भावना योग एक विश्लेषण)

प्रश्न क्र. ९. निम्नलिखित भावनायें किसने भायी लिखिए। **(५)**

१. आश्रव भावना २. अशरण भावना ३. धर्म भावना

४. अनित्य भावना ५. अन्यत्व भावना

प्रश्न क्र.१०. निम्नलिखित किसी एक सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. सम्मोही भावना एवं उनके लक्षणों का स्वरूप अपनी भाषा में लिखिए।

२. ध्यानानुप्रेक्षा भावनाओं का स्वरूप अपनी भाषा में लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **प्रथम खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – प्रमाण नय तत्त्वालोक)

प्रश्न १. अ. निम्न भेद किसका है, लिखिए। **(५)**

१. अनैकान्तिक २. विपरीतान्वय ३. निराकृत साध्यधर्मविशेषण

४. संदिग्धसाध्यव्यतिरेक ५. नैगम

ब. निम्न दर्शनकार कितने प्रमाणों को मानते हैं, लिखिए। **(५)**

१. वैशेषिक २. भाट्ट ३. चार्वाक

४. प्रभाकर ५. बौद्ध

क. निम्न उदाहरण किसका है, लिखिए। **(५)**

जैसे – स्तम्भस्वभावात् कुम्भस्वभावव्यावृत्ति:। – इतरेतराभाव

१. गच्छत्तृणस्पर्शज्ञानम्। २. अयं स्थाणु र्वा पुरुषो वा।

३. तत्तीर्थंकरबिम्बमिति। ४. तस्मादग्निरत्र।

५. चेतनाचेतनयो:।

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सूत्रों के ससंदर्भ अर्थ लिखिए। **(१०)**

१. सामान्यं द्विप्रकारं – तिर्यक्सामान्यमूर्ध्वतासामान्यञ्च।

२. तत्रैव द्व्यंगस्तुरीयस्य।

३. यत्प्रमाणेन प्रसाध्यते तदस्य फलम्।

४. पर्यायस्तु क्रमभावी, यथा तत्रैव सुखदु:खादि।

५. विधि: सदंश:।

६. ज्ञानादन्योऽर्थ: पर:।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ४ सवालों के जवाब लिखिए। **(२०)**

१. निम्न गाथा को विस्तार से समझाइए।

रागद्वेषविजेतारं, ज्ञातारं विश्ववस्तुन:।
शक्रपूज्यं गिरामीशं, तीर्थेशं स्मृतिमानये।।

२. प्रत्यभिज्ञान और तर्क किसके भेद हैं? उनके स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

३. संग्रह नय और समभिरूढ नय के स्वरूप का निरूपण कीजिए।

४. आत्मा संबंधी चार्वाक के मत का खण्डन करके आत्मा किन विशेषणों से विशिष्ट है, स्पष्ट कीजिए।

५. निम्न पदों की परिभाषा लिखिए।

अ. वाद ब. जिगीषु क. सभ्य ड. सभापति इ. स्वात्मनि तत्त्वनिर्णिनीषु

P.T.O

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. सांव्यावहारिक प्रत्यक्ष के स्वरूप तथा भेदों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

२. 'तदुत्पत्ति और तदाकारता से प्रतिनियत पदार्थ को जान सकते हैं।' यह मान्यता किसकी है? उसका खण्डन करके जैन दर्शन के मान्यता की सार्थकता समझाइए।

(खण्ड ख – कर्मग्रन्थ भाग १)

प्रश्न ५. सही है या गलत बताइए। **(५)**

१. बन्ध के चार भेद हैं।

२. जो प्राणों को धारण नहीं करता है, वह जीव है।

३. माया का अर्थ है कपट।

४. हाड्डियों की रचना को संस्थान कहते हैं।

५. गौरव तीन प्रकार का होता है।

प्रश्न ६. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ की परिभाषा लिखिए। **(६)**

१. श्रुतज्ञान २. नोकषाय ३. औदारिक शरीर

४. दुस्वर नामकर्म

ब. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथा का अर्थ लिखिए। **(४)**

१. अणुगामि वड्ढमाणय पडिवाइयरविहा छहा ओही।
रिउमइ विउलमइ मणनाणं केवलमिगविहाणं।।

२. अक्खर सन्नी सम्मं साइयं खलु सपज्जवसियं च।
गमियं अंगपविट्ठं सत्तवि एए सपडिवक्खा।।

२. पगइठिइरसपएसा तं चउहा मोयगस्स दिट्ठंता।
मूलपगइऽट्ठ उत्तरपगइ अडवन्नसय भेयं।।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. शरीर नाम कर्म के भेदों को स्पष्ट कीजिए।

२. संहनन नाम कर्म के भेदों को स्पष्ट कीजिए।

३. दर्शनमोहनीय कर्मबन्ध के कारण लिखिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. त्रसदशक की प्रकृतियों पर प्रकाश डालिए।

२. नामकर्म की पिण्डप्रकृतियों का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **प्रथम खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – दशवैकालिक सूत्र संपूर्ण)

प्रश्न १. अ. सही है या गलत बताइए। **(५)**

१. वायुकायिक जीव चेतनावान है।

२. 'खुड्डियायार कहा' अध्ययन में १६ गाथाएं है।

३. राजीमती भोजराज उग्रसेन की पुत्री है।

४. जो मार्ग कीचड युक्त हो उस मार्ग से मुनि को जाना चाहिए।

५. वनस्पतिकाय के समारम्भ का यावज्जीवन के लिए साधु को त्याग करना चाहिए।

ब. अंकों में जवाब दीजिए। **(५)**

१. भाषा के कितने भेद हैं?

२. दशवैकालिक सूत्र में कितने अध्ययन आये हैं?

३. साधु आचार के कितने स्थान हैं?

४. सुवाक्यशुद्धि नामक अध्ययन में कितनी गाथाएं हैं?

५. आचारसमाधि के कितने भेद हैं?

प्रश्न २ . निम्नलिखित किन्हीं ५ प्राकृत शब्द का हिंदी में अर्थ लिखकर उसके कितने भेद हैं, बताइए। **(१०)**

१. संजमो	२. तिगुत्ता	३. छज्जीवणिया
४. सुहुमाइं	५. कसाए	६. अंडसुहुमं

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. निम्नलिखित गाथा का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उद्देसियं कीयगडं, णियागमभिहडाणि य।
राइभत्ते सिणाणे य, गंधमल्ले य वीयणे।।

२. भिक्षु ने अपकाय की यतना कैसी करनी चाहिए चौथे अध्ययन के द्वारा उसको स्पष्ट कीजिए।

३. साधु ने कितने प्रकार के आहार को ग्रहण नहीं करना चाहिए?

४. मुनि के लिए रात्रि भोजन का सर्वथा निषेध क्यों कहा है?

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. प्रथम अध्ययन का सार अपने शब्दों में बताइए।

२. चार समाधियों का वर्णन स्पष्ट कीजिए।

P.T.O

(खण्ड ख – उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन ६ से २०)

प्रश्न ५. अ. सही है या गलत बताइए। **(५)**

१. जो ऋजुभूत होता है, उसमें धर्म ठहरता है।

२. साधक ने भारण्डपक्षी की तरह प्रमत्त होकर विचरण करना चाहिए।

३. बालजीव की दो प्रकार की गति होती है।

४. सभी प्राणियों को अपना जीवन अप्रिय है।

५. मनुष्यों का जीवन भी क्षणभंगुर है।

ब. निम्नलिखित प्राकृत शब्द का हिंदी में अर्थ बताइए। **(५)**

१. सोयबले २. आयारं ३. जोई

४. मित्तवग्गा ५. राइओ

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. आयुष्य कितने और कौन-से प्रकार के हैं?

२. श्रेणिक के धर्मक्षेत्र आश्रित उपकारी कौन-कौन थे?

३. संसार को दुःखमय क्यों कहा गया है?

४. श्रमण कितने प्रकार के कहे गये हैं? कौन-से?

५. 'संसार में रक्षा करनेवाला कौन है?', यह बात किसने किससे कही?

६. ब्रह्मदत्त को प्रतिबोध देने से क्या लाभ हुआ?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. ब्रह्मचर्य समाधि स्थान के किन्हीं ५ भेदों को बताइए।

२. देवेन्द्र ने नमिराजर्षि मुनि की स्तुति किस प्रकार से की?

३. सुविनीत के कोई भी १० गुणों को बताइए।

४. भिक्षु बनकर क्या करना चाहिए? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. मनुष्यजन्म की दुर्लभता के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

२. ६ट्ठें अध्ययन का सार अपनी भाषा में लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **द्वितीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – संस्कृत सुनिधि भाग – ४)

प्रश्न क्र. १. अ. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए। **(५)**

१. अभिनेता बालक को नाटक दिखाता है। २. पुस्तकों में आगम उत्कृष्ट होते हैं।

३. विद्यायुक्त स्त्री पुस्तक पढती है। ४. मेरी पाठशाला घर से दूर है।

५. पढने की इच्छा श्रेष्ठ है।

ब. चित्रम् आधृत्य शब्दसूची–सहायतया संस्कृते पञ्चवाक्यानि लिखेयुः। **(५)**

(**शब्दसूची** – अश्वशकटम्, द्विचक्रिका, बृहद्गृहम्, खगाः, मेघाः, उद्यानम्, जलाशयः, दर्शकाः, कारयानम्, पक्षिणः)

प्रश्न क्र. २. मुहावरों का हिंदी अर्थ बताकर संस्कृत में वाक्य में प्रयोग कीजिए। (कोई ५) **(१०)**

१. इष्टिकायाः उत्तरं पाषाणः २. अर्धो घटोघोषमुपैति नूनम् ३. अक्षिणी खटखटायेते

४. त्रिशंकुरिवांतरा तिष्ठ ५. अणुं पर्वती कृ ६. चित्ते अवधृ

प्रश्न क्र. ३. किन्हीं दो सवालों के यथोचित जवाब लिखिए। **(१०)**

१. 'का पाण्डुपत्नि गृहभूषणं.....' यह कौन–सी प्रहेलिका है? उसका स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

२. तद्धित प्रत्यय किस–किस अर्थ में आते हैं? संस्कृत में स्वनिर्मित उदाहरणों से लिखिए।

३. निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

जैसे– शुक्लः × कृष्णः, वाक्य में प्रयोग – काकः कृष्णः अस्ति।

अ. आमिषः आ. आदानः इ. सत्यम् ई. उदयः उ. घृणा

४. 'सर्वे चौराः' कथा का भावार्थ लिखकर उससे क्या सीख मिलती है, लिखिए।

प्रश्न क्र. ४. 'भगवान् महावीरः' इस विषयपर संस्कृत में निबंध लिखिए। **(१०)**

P.T.O

(खण्ड ख – सुबोध प्राकृत व्याकरण भाग – ३)

प्रश्न क्र. ५.जोड लगाइए। (५)

अ – स्तंभ		**ब – स्तंभ**
१. नेत्तेण अंधो	–	अ. अव्ययी भाव समास
२. चउवीसइमो	–	ब. तद्धित शब्द
३. उवगिहं	–	क. उपपद विभक्ति
४. रायकेरं	–	ड. प्रेरणार्थक क्रिया
५. लिहाविज्ज	–	इ. क्रमवाचक विशेषण

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। (कोई ५) (१०)

१. प्रेरणार्थक धातु बनाने के लिए कितने प्रत्यय लगते हैं? कौन–से?
२. कितने धातुओं के योग में चतुर्थी विभक्ति आती है? कौन–से?
३. धातु संबंधी किन्हीं दो विशेषताओं को सोदाहरण लिखिए।
४. तुलनार्थक प्रत्यय कितने हैं? कौन–से?
५. समास के भेद कितने हैं? कौन–से?
६. शब्द कितने प्रकार के हैं? कौन–से?

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित किन्हीं दो सवालों के यथोचित जवाब लिखिए। (१०)

१. पंचमी विभक्ति का प्रयोग कहां–कहां होता है? स्वनिर्मित उदाहरणों द्वारा लिखिए।
२. 'उज्जमसीलो किसीवलो' इस संवाद का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।
३. प्रेरक अंग बनाने की प्रक्रिया को स्वनिर्मित उदाहरणों से लिखिए।
४. 'जस्सत्थि.....' गाथा का व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए।

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किसी एक सवाल का यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। (१५)

१. संख्यावाचक शब्दों के नियम लिखते हुए उन पदों से निर्मित १५ प्राकृत वाक्य लिखिए।
२. समास के भेद–प्रभेदों का स्वनिर्मित उदाहरणों से वर्णन कीजिए।

(खण्ड ग – ज्ञाताधर्मकथा सूत्र)

प्रश्न क्र. ९. राजा का नगरी से मिलान कीजिए। (५)

अ – स्तंभ		**ब – स्तंभ**
१. जितशत्रु राजा	–	अ. राजगृह नगरी
२. श्रेणिक राजा	–	ब. तेतलीपुर नगरी
३. पद्मनाभ राजा	–	क. पुण्डरीकिणी नगरी
४. कनकरथ राजा	–	ड. चंपा नगरी
५. पुण्डरिक राजा	–	इ. अपरकंका नगरी

प्रश्न क्र. १०. निम्नलिखित किसी एक सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। (१५)

१. आहार का लक्ष्य क्या होना चाहिए? सुंसुमा के अध्ययन से समझाइए।
२. 'दर्दुरज्ञात' अध्ययन का सार अपने शब्दों में लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **द्वितीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – कर्मग्रन्थ भाग २)

प्रश्न १. अ. सही है या गलत बताइए। **(५)**

१. छट्ठें गुणस्थान में बन्धयोग्य ६३ प्रकृतियां होती हैं।

२. इस कर्मग्रंथ में ४० गाथाएं हैं।

३. उदय के समान उदीरणा होती है।

४. बारहवें गुणस्थान की उदययोग्य १२ प्रकृतियां हैं।

५. चारित्ररहित सम्यग्दृष्टि जीव चौथे गुणस्थान वाले कहलाते हैं।

ब. निम्नलिखित गुणस्थानों में कितनी प्रकृतियों का उदय होता है बताइए। **(५)**

१. उपशांत मोहनीय गुणस्थान २. मिश्र गुणस्थान ३. मिथ्यात्व गुणस्थान

४. अयोगिकेवली गुणस्थान ५. देशविरति गुणस्थान

प्रश्न २. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ की परिभाषा लिखिए। **(६)**

१. उदीरणा २. स्थितिघात ३. अपूर्व स्थितिबंध

४. बालतपस्वी

ब. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथाओं का अर्थ लिखिए। **(४)**

१. उदओ विवागवेयणमुदीरण अपत्ति इह दुवीससयं।
सतरसयं मिच्छे मीस सम्म आहार जिणऽणुदया।।

२. अपुव्वाइ चउक्के अण–तिरि–निरयाउ विणु बियाल सयं।
सम्माइ चउसु सत्तग खयम्मि इगचत्त–सयमहवा।।

३. मिच्छे सासण मीसे अविरय देसे पमत्त अपमत्ते।
नियट्टि अनियट्टि सुहुमुवसम खीण सजोगि अजोगि गुणा।।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. आहारकद्विक का उदय छठे गुणस्थान में क्यों पाया जाता है?

२. अप्रमत्त संयत गुणस्थान का स्वरूप बताइए।

३. अविरत जीव कितने प्रकार के होते हैं, स्पष्ट कीजिए।

४. दूसरे गुणस्थान में कितने कर्मों का उदय नहीं होता है? कौन–से? और क्यों, स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१.आठवें, नौवें और दसवें गुणस्थानों की बन्धयोग्य प्रकृतियों की संख्या और उनके नाम बताइए।

२. १४ गुणस्थानों में उदीरणा का स्वरूप बताइए।

P.T.O

(खण्ड ख – कर्मग्रन्थ भाग ३)

प्रश्न ५. अ. अंकों में जवाब दीजिए। **(५)**

१. मार्गणाएं कितनी हैं?

२. आहारक जीवों में कितने गुणस्थान होते हैं?

३. संसारी जीवों की अपेक्षा से बन्धयोग्य कितनी प्रकृतियां हैं?

४. उपशम सम्यक्त्व में कितने गुणस्थान होते हैं?

५. अभव्य जीवों में कितने गुणस्थान होते हैं?

ब. निम्न मार्गणाओं के कितने भेद हैं, लिखिए। **(५)**

१. इन्द्रिय मार्गणा २. दर्शन मार्गणा ३. भव्य मार्गणा

४. वेद मार्गणा ५. काय मार्गणा

प्रश्न ६. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ की परिभाषा लिखिए। **(६)**

१. वेद २. ज्ञान ३. योग

४. कषाय

ब. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथाओं का अर्थ लिखिए। **(४)**

१. विणु नरयसोल सासणि सुराउ अण एगतीस विणु मीसे।
ससुराउ सयरि सम्मे बीयकसाए विणा देसे।।

२. बंधविहाणविमुक्कं वंदिय सिरिवद्धमाणजिणचंदं।
गइयाईसु वुच्छं समासओ बंधसामित्तं।।

३. अड उवसमि चउ वेयगि खइए इक्कार मिच्छतिगि देसे।
सुहुमि संठाणं तेरस आहारगि नियनियगुणोहो।।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. मन:पर्यव ज्ञान की परिभाषा लिखकर उसमें कौन–से गुणस्थान में कितने कर्मों का बन्ध होता है, लिखिए।

२. भवनवासी देवों में गुणस्थान की विवक्षा में कर्मबन्धों का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

२. पर्याप्त तिर्यंच के दूसरे गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का बंध होता है, स्पष्ट कीजिए।

४. वैक्रिय काययोग और वैक्रिय मिश्रकाययोग में कितने गुणस्थान होते हैं और उनमें कितनी प्रकृतियों का बंध होता है?

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. कषाय मार्गणा के क्रोधादि चार भेद तथा अनन्तानुबन्धी आदि चार भेदों में गुणस्थानों की विवक्षा विस्तार से कीजिए।

२. ७ नरकों में कौन–से गुणस्थान में कितने कर्मों का बंध होता है, स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **द्वितीय खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – नन्दी सूत्र)

प्रश्न १. अ. निम्नलिखित आचार्यों को क्रम से लगाकर उनके क्रमांक लिखिए। **(५)**

१. आचार्य यशोभद्र २. आचार्य जम्बूस्वामी ३. आचार्य शय्यंभव
४. आचार्य सुधर्मा स्वामी ५. आचार्य महागिरी

ब. निम्नलिखित के कोई दो भेद लिखिए। **(५)**

१. अनिन्द्रिय प्रत्यक्ष २. भवस्थ केवलज्ञान ३. अंगप्रविष्ट
४. दृष्टिवाद ५. सूत्र

क. निम्नलिखित में से उत्कालिक सूत्र कौन–से हैं और कालिक सूत्र कौन–से हैं, पहचानिए। **(५)**

१. दशवैकालिक २. आत्मविशुद्धि ३. उत्तराध्ययन
४. जीवाभिगम ५. बृहत्कल्प ६. धरणोपपात
७. अंगचूलिका ८. मण्डलप्रवेश ९. उत्थानश्रुत
१०. चरणविधि

प्रश्न २. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ गाथाओं का अर्थ लिखिए। **(६)**

१. मणपज्जवणाणं पुण, जणमणपरिचिंतियत्थपागडणं।
माणुसखित्तणिबद्धं, गुणपच्चइयं चरित्तवओ।।
२. तव–नियम–सच्च–संजम, विणयज्जव–खंतिमद्दव–रयाणं।
सील गुण–गद्दियाणं, अणुओग जुगप्पहाणाणं।।
३. भणगं करगं झरगं, पभावगं णाण दंसण गुणाणं।
वंदामि अज्जमंगु, सुयसागर पारगं धीरं।।
४. सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुमयरं हवइ खित्तं।
अंगुलसेढी मित्ते, ओसप्पिणिओ असंक्खिज्जा।।

ब. निम्नलिखित किन्हीं २ की परिभाषा लिखिए। **(४)**

१. केवलज्ञान २. प्रत्येकबुद्ध सिद्ध ३. ईहा

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ४ सवालों के जवाब लिखिए। **(२०)**

१. अवाय के स्वरूप को समझाते हुए उसके भेद तथा एकार्थक नामों को भी स्पष्ट कीजिए।
२. संघ स्तुति में आयी कोई २ उपमाओं को अपनी भाषा में लिखिए।
३. गुणसम्पन्न अनगार को होने वाले अवधिज्ञान को संक्षेप में समझाइए।
४. अक्षर श्रुत की व्याख्या करते हुए उसके भेदों को समझाइए।

P.T.O

५. सुनने की विधि का विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. अश्रुतनिश्रित आभिनिबोधिक ज्ञान किसे कहते हैं? उसके भेदों को समझाते हुए किन्हीं दो भेदों को एक-एक उदाहरण से स्पष्ट कीजिए।

२. पूर्वगत किसे कहते हैं? उसके भेदों को विस्तार से समझाइए।

(खण्ड ख – भारतीय दर्शन)

प्रश्न ५. उचित पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. न्याय दर्शन के ..... है। (गौतम, कणाद, जिनेंद्र)

२. वेदांत दर्शन के ..... प्रस्थान हैं। (दो, तीन, चार)

३. जैन ..... को नहीं मानते हैं। (ईश्वर, तीर्थंकर, बुद्ध)

४. बुद्ध के वचनों का संकलन ..... में हुआ। (आगम, वेद, त्रिपिटक)

५. शून्यवाद के प्रवर्तक ..... है। (बुद्ध, नागार्जुन, कपिल)

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. बौद्ध दर्शन की प्रमुख शाखाएं कौन-सी है?

२. वैदिक काल में कितने प्रकार के साहित्य देखने को मिलते हैं? कौन-से?

३. समव्याप्ति किसे कहते हैं?

४. चार्वाक शब्द का अर्थ लिखिए।

५. ब्रह्म की कितनी अवस्थाएं हैं? कौन-सी?

६. परमाणुवाद किसे कहते हैं?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. जैन दर्शनानुसार त्रिरत्न को स्पष्ट कीजिए।

२. चार्वाक ईश्वर को क्यों नहीं मानता है? स्पष्ट कीजिए।

३. संप्रज्ञात और असंप्रज्ञात समाधि को स्पष्ट कीजिए।

४. सांख्य सत्कार्यवाद के प्रतिपादन में कौन-सी युक्ति देते हैं?

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. ग्रन्थ के आधार पर योग के अष्टांगों का निरूपण अपनी भाषा में कीजिए।

२. मीमांसक दर्शन की मान्यताओं का विस्तृत वर्णन कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **प्रथम खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – लघुसिद्धान्तकौमुदी)

प्रश्न क्र. १. एक वाक्य में जवाब लिखिए। **(५)**

१. 'त'वर्ग को श्चुत्व का निषेध करनेवाला सूत्र कौन-सा है?

२. शाकल्य के मतानुसार किन वर्णों का लोप होता है?

३. मुनित्रय के आद्य उच्चारण को क्या कहते हैं?

४. 'द्' को 'ड्' करनेवाला सूत्र कौन-सा है?

५. ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत संज्ञक सूत्र कौन-सा है?

प्रश्न क्र. २. निम्न प्रत्याहारों में कौन-कौन से वर्ण आते हैं यह लिखिए। (कोई ५) **(५)**

१. अट्	२. यय्	३.खर्
४. झर्	५. हश्	६. शल्

प्रश्न क्र. ३. किन्हीं ५ में सन्धि विधायक सूत्र का निर्देश करते हुए सन्धि कीजिए। **(१०)**

१. गङ्गा + उदकम्	२. प्र + एजते	३. षड् + सन्तः
४. सन् + अच्युतः	५. षड् + णवति	६. मधु + अरिः

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ संज्ञाओं के सूत्र अर्थ सहित लिखिए। **(१०)**

१. आम्रेडित संज्ञा	२. प्रत्याहार संज्ञा	३. संयोग संज्ञा
४. धातु संज्ञा	५. वृद्धि संज्ञा	६. टि संज्ञा

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किन्हीं २ उदाहरणों की ससूत्र सिद्धि कीजिए। **(१०)**

१. शार्ङ्गिन् + जयः	२. पुम् + कोकिलः	३. देव + ऐश्वर्यम्
४. अहन् + अहन्		

(खण्ड ख – प्राकृत व्याकरण, द्वितीय पाद तक)

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित संस्कृत रूपों के प्राकृत में रूप लिखिए। (कोई ५) **(५)**

जैसे निशाकरः – निसिअरो

१. परस्परं	२. चपेटा	३. यथाजातं
४. निस्पृहः	५. दैवज्ञः	६. तप्तः

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित प्राकृत रूपों के संस्कृत में रूप लिखिए। (कोई ५) **(५)**

१. सुप्पइ	२. वज्जरो	३. निद्धणो

४. णलाडं ५. आगरिसो ६. आवज्जं

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किन्हीं ४ सूत्रों के अर्थ और उदाहरण लिखिए। **(२०)**

१. प्रावृट्-शरत्तरणयः पुसि २. णइ चेअ चिअ च्च अवधारणे

३. क्त्वस्तुमत्तूण-तुआणा: ४. छायायां होऽकान्तौ वा

५. अउ: पौरादौ च ६. पानीयादिष्वित्

प्रश्न क्र. ९. निम्न प्राकृत रूपों की संस्कृत में सिद्धि कीजिए। (कोई ३) **(१५)**

१. कइद्धओ २. पायवडणं ३. खरहिअओ

४. सयणो ५. इन्दहणू

प्रश्न क्र. १०. निम्नलिखित किन्हीं ३ संस्कृत रूपों की प्राकृत में सिद्धि कीजिए। **(१५)**

१. कश्यपः २. एतावन्मात्रम् ३. वडवानल:

४. श्लेष्मा ५. दशार्ह:

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **प्रथम खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – प्रमाण मीमांसा)

प्रश्न १. निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत, पहचानिए। **(५)**

१. प्रतिदृष्टांत के धर्म को अपने दृष्टांत में स्वीकार करना प्रतिज्ञाहानि निग्रहस्थान है।

२. असंगत पदों के समूह का प्रयोग करना अविज्ञातार्थ निग्रहस्थान है।

३. अनुमान के अवयवों का अनुक्रम आगे-पीछे करना अप्राप्तकाल निग्रहस्थान है।

४. एक अर्थ का प्रतिपादन करने के लिए एक से अधिक हेतु का प्रयोग करना अधिक निग्रहस्थान है।

५. वादी के अनुभाषण करने पर भी उसका जवाब न सुझना अज्ञान निग्रहस्थान है।

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सूत्रों का हिन्दी में ससंदर्भ अर्थ लिखिए। **(१०)**

१. अनुभयत्रोभयकोटिस्पर्शी प्रत्यय: संशय:।

२. विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयभेदात् तद्भेद:।

३. न दृष्टान्तोऽनुमानाङ्गम्।

४. स व्याप्तिदर्शनभूमि।

५. विषयोपदर्शनार्थं तु प्रतिज्ञा।

६. विशेष्यासिद्धादीनामेष्वेवान्तर्भाव:।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के सटीक जवाब लिखिए। **(१०)**

१. इन्द्रिय के भेद-प्रभेदों का निरूपण कीजिए।

२. नैयायिक द्वारा मान्य प्रत्यक्ष प्रमाण का लक्षण बताकर उसकी सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

३. छल किसे कहते हैं? उसके भदों को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. हेत्वाभास के स्वरूप को समझाकर उसके भदों को स्पष्ट कीजिए तथा अनैकान्तिक हेत्वाभास के भदों का निरूपण कीजिए।

२. ग्रन्थ के आधार से परोक्ष प्रमाण के स्वरूप तथा भेदों का निरूपण कीजिए।

(खण्ड ख – तत्त्वार्थसूत्र)

प्रश्न ५. जोड लगाइए। **(५)**

कर्म	**बन्ध हेतु**
१. दर्शनावरणीय	अ. आत्मनिन्दा
२. असातावेदनीय	ब. बालतप
३. उच्च गोत्र	क. परिदेवन
४. दर्शनमोहनीय	ड. उपघात
५. देवायु	इ. संघ का अवर्णवाद

P.T.O

प्रश्न ६. अंकों में जवाब दीजिए। **(५)**

१. तृतीय अध्ययन में कितने सूत्र हैं?

२. क्षायिकभाव के कितने भेद हैं?

३. तिर्यंच की उत्कृष्ट स्थिति कितने पल्योपम की हैं?

४. निर्वतना के कितने भेद हैं?

५. नाम कर्म के कितने भेद हैं?

प्रश्न ७. निम्नलिखित भेद चतुर्निकाय के देवों में से किसके हैं, बताइए। **(५)**

१. ग्रह २. राक्षस ३. आनत

४. स्तनित ५. गान्धर्व

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. सम्यक्त्व मोहनीय २. आनुपूर्वी ३. अप्रत्याख्यानावरण क्रोध

४. संघात ४. पराघात ६. नीच गोत्र

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं ४ सूत्रों का ससंदर्भ अर्थ स्पष्ट कीजिए। **(२०)**

१. उपयोग: स्पर्शादिषु। २. प्राङ्मानुषोत्तरान् मनुष्या:।

३. स्निग्धरूक्षत्वाद् बन्ध:। ४. वेदनीये शेषा:।

५. कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्ष:।

प्रश्न १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तृत जवाब लिखिए। **(१५)**

१. किताब के आधार पर हिंसा का स्वरूप अपनी भाषा में समझाइए।

२. मतिज्ञान किसे कहते हैं? उसके भेदों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **प्रथम खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – कर्मग्रन्थ भाग ४)

प्रश्न १. अ. सही है या गलत बताइए। **(५)**

१. संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में छह उपयोग पाये जाते हैं।

२. यथाख्यात संयम में कषाय का उदय लेशमात्र भी नहीं है।

३. एकेन्द्रिय जीवों में आदि की चार पर्याप्तियां होती हैं।

४. छट्ठें गुणस्थान का नाम सूक्ष्मसंपराय गुणस्थान है।

५. योग पन्द्रह होते हैं।

ब. निम्न मार्गणाओं में कितने जीवस्थान होते हैं, बताइए। **(५)**

१. नरक गति २. एकेन्द्रिय ३. त्रसकाय

४. वचनयोग ५. तेजोलेश्या

प्रश्न २. अ. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथाओं का अर्थ लिखिए। **(४)**

१. वेय नरित्थि नपुंसा कसाय कोहमयमायलोभ त्ति।
मइसुयऽवहिमणकेवलविभंगमइसुअनाण सागारा।।

२. सव्वजियठाण मिच्छे सग सासणि पण अपज्ज सन्निदुगं।
सम्मे सन्नी दुविहो सेसेसुं सन्निपज्जत्तो।।

३. तिअनाण नाण पण चउ दंसण बार जिय लक्खणुवओगा।
विणु मणनाण दुकेवल नव सुरतिरिनिरयअजएसु।

ब. किन्हीं ३ मार्गणा के भेदों में जीवस्थान, गुणस्थान, योग और उपयोग कितने हैं, लिखिए। **(६)**

१. देवगति २. एकेन्द्रिय ३. वायुकाय

४. लोभ

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. दर्शन मार्गणा के भेदों का स्वरूप लिखिए।

२. ग्रंथ में उपयोग के अनन्तर योग का कथन क्यों किया है, इसका आशय बताइए।

३. बंध किसे कहते हैं? कर्मबंध के चार कारणों का स्वरूप बताइए।

४. गुणस्थानों में उदीरणा पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. योग किसे कहते हैं और उसके भेदों का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

२. एकेन्द्रिय के सूक्ष्म और बादर भेदों का स्वरूप विस्तार से बताइए।

P.T.O

(खण्ड ख – उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन २१ से ३६)

प्रश्न ५. अ. एक शब्द में जवाब लिखिए। (५)

१. पालित की पत्नी ने पुत्र को कहां जन्म दिया?

२. मध्यवर्ती तीर्थंकरों के समय साधु कैसे होते थे?

३. अभोगी जीव किसमें लिप्त नहीं होता?

४. बैलों को मारते-मारते क्या टूट जाता है?

५. कबूतर की गर्दन के समान वर्ण किस लेश्या का है?

ब. निम्न प्राकृत शब्द के लिए हिन्दी शब्द लिखिए। (५)

१. अदिस्साणं २. पवत्तमाणं ३. संरक्खओ

४. वच्छल्ल ५. कब्बड

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। (१०)

१. निसर्ग रुचि किसे कहते हैं?

२. प्रायश्चित्त करने से जीव को क्या लाभ होता है?

३. राजीमति ने रथनेमि को समझाने हेतु कौन-से दो उदाहरण दिये?

४. ईर्यासमिति का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

५. चरण विधि अध्ययन में चार-चार कौन-सी बातें बताई हैं?

६. श्रोत्रेन्द्रिय में आसक्त जीव की दशा का वर्णन कीजिए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। (१५)

१. समाचारी के नाम बताते हुए किन्हीं ५ समाचारी को स्पष्ट कीजिए।

२. दर्शनावरणीय कर्म और मोहनीय कर्म की प्रकृतियां लिखकर उनकी स्थिति लिखिए।

३. केशीश्रमण द्वारा पूछे गये किन्हीं २ प्रश्नों को स्पष्ट कीजिए।

४. शुक्ल लेश्या के वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, स्थिति आदि को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। (१५)

१. तप की व्याख्या लिखकर उसके भेद-प्रभेदों को स्पष्ट कीजिए ।

२. तीन विकलेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च के भेद, इनकी भवस्थिति, कायस्थिति को स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **द्वितीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – सिद्धान्त कौमुदी कारक प्रकरण)

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित अव्ययों से स्वनिर्मित वाक्य बनाइए। **(५)**

१. अन्तरेण २. सार्धम् ३. आरात्

४. उत्तरतः ५. कुशलम्

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित धातुओं के योग में कौन–सी विभक्ति आती है, बताइए। **(५)**

१. क्लृप् २. ईश् ३. अधि+स्था

४. अश् + णिच् ५. सम् + ज्ञा

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. ज्ञीप्स्यमान की कितने धातुओं के योग में सम्प्रदान संज्ञा होती है? कौन–से?

२. हिंसार्थक कितने धातुओं के योग में षष्ठी विभक्ति आती है? कौन–से?

३. अपि अव्यय की कितने अर्थ में प्रवचनीय संज्ञा होती है? कौन–से?

४. 'स्वस्वामिभावादि' सम्बन्ध कितने प्रकार के हैं? कौन–से?

५. निमित्त के पर्यायवाची शब्द कितने हैं और कौन–से?

६. तुल्यार्थक शब्द कितने हैं और कौन–से?

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं ३ सूत्रों के सोदाहरण अर्थ लिखिए। **(१५)**

१. मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु। २. सर्वनाम्नस्तृतीया।

३. परिक्रियणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्। ४. उभयप्राप्तौ कर्मणि।

५. अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति।

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. उपपद विभक्ति किसे कहते हैं? 'उभसर्वतसो: .....' इस वार्तिक का अर्थ अपनी भाषा में स्वनिर्मित उदाहरणों के द्वारा लिखिए।

२. प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किन–किन स्थानोंपर होता है, स्वनिर्मित उदाहरणों से लिखिए।

(खण्ड ख – हेम प्राकृत व्याकरण तृतीय–चतुर्थ पाद)

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित प्राकृत रूपों के संस्कृत में रूप लिखिए। **(५)**

१. कत–सिनानेन २. याणवत्तं ३. पारक्कडा

४. वड्डतणु ५. तिअडा

P.T.O

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित संस्कृत रूपों के प्राकृत में रूप लिखिए। **(५)**

१. आस्वादितम् २. खल्वाटम् ३. मूर्धानः

४. वितर्दिः ५. द्विजः

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किन्हीं ५ क्रियाओं से प्राकृत वाक्य बनाइए। **(१०)**

१. णीलुञ्छइ २. पम्हुसइ ३. छिविज्जइ

४. पेच्छामु ५. वाएज्जा ६. रावेहिसि

प्रश्न क्र. ९. नीचे दिए किन्हीं ३ सूत्रों के सोदाहरण अर्थ लिखिए। **(१५)**

१. तो दोऽनादौ शौरसेन्यामयुक्तस्य। २. त्यादीनामाद्यत्रस्याद्यस्येचेचौ

३. अनादौ स्वरादसंयुक्तानां ४. वादसो दस्य होनोदाम्

५. अत एवैच् से

प्रश्न क्र. १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१५)**

१. मागधी प्राकृत के लक्षण ससूत्र एवं सोदाहरण लिखिए।

२. किन्हीं ३ गाथाओं के अर्थ लिखकर रेखांकित पद में किस सूत्र से क्या परिवर्तन हुआ है लिखिए।

अ. <u>जेप्पि</u> असेसु कसाय-बलु <u>देप्पिणु</u> अभउ जयस्सु।
<u>लेवि</u> महव्वय सिवु लहहिं <u>झाएविणु</u> तत्तस्सु।।

आ. एइ ति घोडा एह <u>थलि</u> एइ ति <u>निसिया</u> <u>खग्ग</u>।
एत्थ मुणीसिम जाणीअइ जो न वि वालइ <u>वग्ग</u>।।

इ. सुपुरिस कङ्गुहे अणुहरहिं भण कज्जें <u>कवणेण</u>।
जिवँ जिवँ वड्ढत्तणु लहहिं तिवँ तिवँ नवहिँ सिरेण।।

ई. <u>सवधु</u> केरप्पिणु <u>कधिदु</u> मइँ तसु पर <u>सभलउँ</u> जम्मु।
जासु न चाउ, न चारहडि, न य पम्हट्ठउ धम्मु।।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **द्वितीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

षड्दर्शन समुच्चय

प्रश्न १. उचित पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. निर्विघ्न रूप से शास्त्र के पारगमन के लिए ..... मंगल किया जाता है। (आदि, मध्य, अंतिम)

२. आप्त वचनों से होनेवाले ज्ञान को ..... कहते हैं। (शब्द, आगम, वेद)

३. कपिल का ..... भी नाम है। (परमर्षि, ऋषि, मर्षि)

४. ..... ने न्याय सूत्र की रचना की। (भरट, महेश्वर, अक्षपाद)

५. आप्त परीक्षा ग्रन्थ ..... का है। (जैनों, दिगम्बरों, श्वेताम्बरों)

प्रश्न २. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तंभ	**'ब' स्तंभ**
१. जैन दर्शन	अ. जैमिनीय मत
२. बौद्ध दर्शन	ब. औलुक्य दर्शन
३. वैशेषिक दर्शन	क. अक्षपाद मत
४. नैयायिक दर्शन	ड. नव तत्त्व
५. मीमांसक दर्शन	इ. चार आर्य सत्य

प्रश्न ३. एक शब्द में जवाब लिखिए। **(५)**

१. चावार्क के गुरु कौन है?

२. बहुदकों का वेष किसके समान है?

३. अकाम निर्जरा में कर्म अपने आप समय पर क्या ले लेते हैं?

४. अस्पष्ट, अविसंवादी ज्ञान को क्या कहते हैं?

५. भोग क्रिया करनेवाले को क्या कहते हैं?

प्रश्न ४. अंकों में जवाब लिखिए। **(५)**

१. गुणरत्न को आचार्य पद किस वर्ष की उम्र में मिला?

२. विनयवादियों के कितने प्रकार हैं?

३. नैयायिक के तत्त्व कितने हैं?

४. संसारी आत्माओं के कितने भेद हैं?

५. वैशेषिक के गुण कितने हैं?

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं पांच सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. अवग्रह किसे कहते हैं?

P.T.O

२. मानस प्रत्यक्ष किसे कहते हैं?

३. नैयायिकों के लिङ्ग और वेष बताइए।

४. विजिगीषु कथा किसे कहते हैं?

५. अतिवाहिक शरीर किसे कहते हैं?

६. अस्तिकाय किसे कहते हैं?

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. आचार्य गुणरत्न ने कितने ग्रन्थ लिखे? कौन-से?

२. ग्रन्थकार के प्रयोजन कितने प्रकार के हैं? कौन-से?

३. सुगत कितने हैं? कौन-से?

४. दैवसृष्टि कितने प्रकार की है? कौन-सी?

५. निमित्त कितने हैं? कौन-से?

६. भाट्ट कितने प्रमाण मानते हैं? कौन-से?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(३०)**

१. पूर्व, उत्तरमीमांसावादियों का संक्षेप में परिचय लिखिए।

२. एक वस्तु में परस्पर विरोधी अनंतधर्म कैसे हो सकते हैं? स्पष्ट कीजिए।

३. जैन मतानुसार पुद्गल द्रव्य का निरूपण कीजिए।

४. सोलह गणों की उत्पत्ति कैसे होती है? समझाइए।

५. बौद्ध मतानुसार अनुमान ज्ञान को स्पष्ट कीजिए।

६. अभाव प्रमाण कितने हैं? कौन-से? विस्तार से समझाइए।

७. वैशेषिक मतानुसार गुण कितने हैं? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब विस्तार से लिखिए। **(३०)**

१. वैशेषिक मतानुसार प्रमाण कितने हैं? कौन-से? स्पष्ट कीजिए।

२. उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य युक्त वस्तु सत् होती है, स्पष्ट कीजिए।

३. केवली कवलाहार करते हैं या नहीं? स्पष्ट कीजिए।

४. नैयायिक मान्य प्रमाणों को स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **द्वितीय खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – आचारांग सूत्र – प्रथम श्रुतस्कन्ध)

प्रश्न १. उचित पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. ..... पुरुष जीव हिंसा में लज्जा का अनुभव करता है। (लज्जा, ग्लानि, संकोच)

२. मद ..... गोत्र बंधन का मुख्य कारण है। (ऊंच, नीच, ऊंच–नीच)

३. जो प्रज्ञा से लोक को जानता है वह ..... कहलाता हैं। (साधु, संयमी, मुनि)

४. कर्म अपना ..... अवश्य देते हैं। (फल, परिणाम, दु:ख)

५. अनुवसु का अर्थ हैं, ...। (वीतराग, सराग, राग)

प्रश्न २. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तंभ	**'ब' स्तंभ**
१. अतिरित्ते	अ. परिज्ञान
२. उववायं	ब. अभिसिंचन
३. परिजाणतो	क. विशेष
४. अभिसेएण	ड. जबडे
५. हणुयं	इ. उपपात

प्रश्न ३. एक वाक्य में जवाब लिखिए। **(५)**

१. 'धूत' शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है?

२. पहले अंग सूत्र का नाम क्या है?

३. 'ग्रन्थ' शब्द का अर्थ बताइए।

४. 'अहोविहार' शब्द का अर्थ बताइए।

५. 'सम्यक्त्व' शब्द का अर्थ बताइए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. हिंसा निवृत्ति के कितने और कौन–कौन से हेतु हैं?

२. काम निवारण के कितने और कौन–कौन से उपाय बताए हैं?

३. परिस्रव किसे कहते हैं?

४. संशय को परिज्ञान क्यों कहा गया है?

५. समितदर्शन पद के कितने और कौन–कौन से अर्थ किये गये हैं?

६. भगवान महावीर कहां–कहां निवास करते थे?

P.T.O

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ सूत्रों के अर्थ लिखिए। **(१०)**

१. तं से अहियाए तं से अबोहिए।

२. अणाणाए मुणिणो पडिलेहेंति।

३. आरंभजं दुक्खमिणं त्ति णच्चा।

४. अचिट्ठं कूरेहिं कम्मेहिं णो चिट्ठं परिविचिट्ठति।

५. एस से परमारामो जाओ लोगंसि इत्थीओ।

६. एवं पेगे महावीरा विप्परक्कमंति।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ४ सवालों के यथोचित जवाब लिखिए। **(२०)**

१. पादपोपगमन संथारे में कौन-सी बातें आचरणीय है?

२. त्रस जीवों के उत्पत्ति स्थानों को संक्षेप में लिखिए।

३. भगवान महावीर की साधना का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

४. सोलह रोगों के नाम लिखकर किन्हीं दो रोगों का वर्णन कीजिए।

५. वृद्धावस्था में आनेवाले कष्टों का निरूपण कीजिए।

६. मोहग्रस्त जीव की दशा का प्रतिपादन उदाहरण द्वारा कीजिए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. पंचम अध्ययन में साधना में तेजस्विता लाने के लिए जो बातें बतायी है, उनको स्पष्ट कीजिए।

२. अचेलक और गुरुकुल में रहने वाले मुनि की साधना को स्पष्ट कीजिए।

(खण्ड ख – राजप्रश्नीय सूत्र)

प्रश्न ८. निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत लिखिए। **(५)**

१. खात तो ऊपर चौडी और नीचे-नीचे संकडी होती जाती है।

२. परित्त संसारी अपरिमित काल तक संसार में भ्रमण करता है।

३. पर्याप्तियां औदारिक, वैक्रिय और आहारक इन तीन शरीरों में होती हैं।

४. चित्त सारथी संसारभीरू नहीं था।

५. आभिनिबोधिक ज्ञान पांच प्रकार का हैं।

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. आगार धर्म का स्वरूप अपने शब्दों में समझाइए।

२. किन कारणों से जीव केवली भाषित धर्म सुन सकता है?

३. रमणीय पदार्थ अरमणीय कैसे बनते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

प्रश्न १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. मतिज्ञान क्या हैं? उसके भेदों को समझाइए।

२. सूर्याभदेव का भावी जन्म कैसा होगा बताइए।

॥ ॐ अर्हन्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **तृतीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांकाः १००**

स्याद्वादमंजिरी

प्रश्न क्र. १. एक शब्द में जवाब लिखिए। **(५)**

१. प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों की उपस्थिति में वस्तु के किस अंश को ग्रहण किया जाता है?
२. राग, द्वेष और मोह के कारण कैसे वाक्य बोले जाते हैं?
३. इन्द्रिय और मन से कौन-सा प्रत्यक्ष पैदा होता है?
४. लोक व्यवहार में उपयोगी हो उसे क्या कहते हैं?
५. आत्मा के ज्ञान में कैसी शक्ति है?

प्रश्न क्र. २. अंको में जवाब लिखिए। **(५)**

१. वनस्पतिकायिक जीव कितने प्रकार के होते हैं?
२. मुक्त जीव कितनी ऊर्मियों से निर्लिप्त रहता है?
३. धर्मी का परिणाम कितने प्रकार का है?
४. प्रवृत्ति विज्ञान कितने प्रकार का है?
५. अशक्ति कितने प्रकार की होती है?

प्रश्न क्र. ३. चौथे पद को लिखिए। **(५)**

१. प्रकाश्य – अर्थ,	प्रकाशक	–	.....
२. करि – हाथी,	कुरंग	–	.....
३. साकार – ज्ञानोपयोग,	निराकार	–	.....
४. द्रव्य – धर्मी,	गुण	–	.....
५. विशेषण – ज्ञान,	विशेष्य	–	.....

प्रश्न क्र. ४. अनुचित पद को अलग कीजिए। **(५)**

१. पूज्यपाद, यशोविजय, अकलंक, विद्यानंदी
२. उपक्रम, निक्षेप, अनुयोग, नय
३. पर्याज, पर्यय, पर्यव, पर्याय
४. इन्द्र, शक्र, पुरन्दर, धुरन्दर
५. शब्द, रूप, गंध, स्पर्श

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किन्ही पाँच की परिभाषाएँ लिखिए। **(१०)**

१. अभिगृहिता भाषा	२. सकलादेश	३. भावेन्द्रिय
४. विवाद	५. संकेत	६. चैत्त

P.T.O

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब संक्षेप में लिखिए। **(१०)**

१. क्षणस्थायी मान्यतावाले कितने दोषों की उपेक्षा करते हैं? कौन-से?

२. वेदान्ती ब्रह्म की सिद्धि कितने प्रमाण से करते हैं? कौन-से?

३. शून्यवादी कितने पदार्थों को अवस्तु मानता है? कौन-से?

४. वर्धमान स्वामी के मूल अतिशय कितने और कौन-से?

५. विधी कितने प्रकार की होती है? कौन-सी?

६. विपर्यय कितने प्रकार के हैं? कौन-से?

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों का निर्देशानुसार जवाब लिखिए। **(३०)**

१. तदुत्पत्ति और तदाकारता का स्वरूप, स्व-निर्मीत उदाहरण के द्वारा लिखिए।

२. व्यवहार राशि में जीव की संख्या नियत होती है, यह स्पष्ट कीजिए।

३. वैशेषिक दर्शन में मान्य 'विशेष' का स्वरूप अपने शब्दों में लिखिए।

४. 'ज्ञान स्वप्रकाशक नहीं' यह मान्यता किसकी है? स्पष्ट कीजिए।

५. अर्थनय किसे कहते हैं? उनका स्वरूप संक्षेप में लिखिए।

६. चार्वाक दर्शन द्वारा मान्य प्रमाण का स्वरूप लिखिए।

७. आत्मा सर्वव्यापक है या नहीं सयुक्तिक लिखिए।

प्रश्न क्र. ८.निम्नलिखित किसी १ दर्शन की मान्यता अपने शब्दों में लिखिए। **(१५)**

१. मीमांसक दर्शन

२. सांख्य दर्शन

प्रश्न क्र. ९. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. प्रमाण के बिना कौन अपने पक्ष की सिद्धि नहीं कर सकता, उनके मत का सयुक्तिक खंडन कीजिए।

२. सप्तभंगी का स्वरूप अपने शब्दों में स्व-निर्मीत उदाहरण के द्वारा लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **तृतीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांकाः १००**

(खण्ड क – जैन तत्त्व प्रकाश)

प्रश्न १. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। **(५)**

१. ..... निधि से तोलने और नापने के उपकरण प्राप्त होते हैं।

२. श्री मल्लीनाथजी के शरीर का वर्ण पन्ना के समान ..... था।

३. जब द्राक्षा पकती है तब कौए को ..... रोग हो जाता है।

४. अशुभ उपयोग ..... कर्म के उदय से होता है।

५. एकत्व भावना का चिंतन ..... ने किया था।

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. अभिग्रह कितने प्रकार के हैं और कौन-कौन से?

२. 'पहला सुख निरोगी काया' इसे स्पष्ट कीजिए।

३. वर्धमान अवधिज्ञान क्या है?समझाइए।

४. तस्कर प्रयोग क्या है? समझाइए।

५. कायविनय किसे कहते हैं?

६. संलाप किसे कहते हैं?

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. एकासन प्रत्याख्यान के कितने आगार हैं? स्पष्ट कीजिए।

२. सातवें व्रत के अतिचार कितने और कौन-कौन से हैं?

३. लौकिक मिथ्यात्व क्या है? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. श्रावक के किन्हीं १५ गुणों का वर्णन कीजिए।

२. सद्वक्ता के किन्हीं १५ गुणों को स्पष्ट कीजिए।

(खण्ड ख – जैन निबंधावली – भाग १)

प्रश्न ५. अ. एक शब्द में जवाब दीजिए। **(५)**

१. कितनी मुद्राओं का दान एक सामायिक की समानता नहीं कर सकता?

२. बुद्ध के सम्पर्क में आकर कौन डाकू भिक्षु बन गया?

३. परिग्रह की वांछा किसको जन्म दे सकती है?

P.T.O

४. टब्बा का समय कौन-सा माना गया है?

५. क्रोध किसकी पगडण्डी है?

ब. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। **(५)**

१. स्थानांग सूत्र में राग और द्वेष की उत्पत्ति ..... से बताई गयी है।

२. स्वच्छ पर्यावरण के लिए मनुष्य का ..... होना आवश्यक है।

३. सजीव विजातीय द्रव्य के संयोग से ..... होता है।

४. ज्ञानकुंजर ..... म.सा. की रचना है।

५. आचार्य भद्रबाहु ..... में थे।

प्रश्न ६. जोड लगाइए। **(५)**

अ स्तंभ		**ब स्तंभ**
१. दुलीचंद जैन	–	अ. भैरूरतनदमानी साहित्य पुरस्कार
२. डॉ. निर्मलकुमार फडकुले	–	आ. स्वामी दयानंद पुरस्कार
३. डॉ. अर्तुरी वर्तुनेन	–	इ. डॉक्टरेट इन फिलासफी
४. अनिलकुमार तिवारी	–	ई. पद्मभूषण पुरस्कार ५१०२
५. पं. सुखलाल संघवी	–	उ. नोबल पुरस्कार

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब संक्षेप में लिखिए। **(१०)**

१. आचार्य श्री आनंदऋषिजी म. सा. के साहित्य के बारे में लिखिए।

२. 'सा विद्या या विमुक्तये' इस उक्ति को स्पष्ट करें।

३. माया के कितने पर्याय है और कौन-से?

४. आरम्भी हिंसा की व्याख्या लिखिए।

५. शाकाहार शब्द का अर्थ समझाइए।

६. अंगबाह्य आगम का अर्थ लिखिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं २ पर टिप्पणी लिखिए। **(१०)**

१. वन सम्पदा का विनाश २. पंचम वाचना

३. स्वाध्याय

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब दीजिए। **(१०)**

१. भगवान महावीर की जीवनदृष्टि कैसी थी, बताइए।

२. सामायिक क्या है? अपने शब्दों में समझाइए।

३. गणों के आन्तर नियमों को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. क्रोध और मान कषाय पर विजय कैसे मिलाई जा सकती है?

२. कर्मशास्त्र में करण कितने कहे गये हैं? स्पष्ट कीजिए।

॥ ॐ अर्हम्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **तृतीय खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – वद्धमान चरियं)

प्रश्न क्र. १. अंकों में जवाब लिखिए। **(५)**

१. भगवान महावीर के जन्म के कितने दिन बाद उनके नामकरण की विधि हुई?
२. भगवान महावीर ने पापफल विपाक के कितने अध्ययन फरमाये?
३. भगवान महावीर की कितनी केवलज्ञानी की संपदा थी?
४. शक्रेंद्र के कितने विमान और अग्रमहिषी हैं?
५. वेद कितने हैं?

प्रश्न क्र. २. जोड लगाइए। **(५)**

अ स्तंभ		**ब स्तंभ**
१. कार्तिक कृष्ण अमावस	–	अ. जन्म कल्याणक
२. चैत्र शुक्ल त्रयोदशी	–	आ. च्यवन कल्याणक
३. आषाढ शुक्ल षष्ठी	–	इ. निर्वाण कल्याणक
४. मार्गशीर्ष कृष्ण दशमी	–	ई. केवलज्ञान कल्याणक
५. वैशाख शुक्ल दशमी	–	उ. दीक्षा कल्याणक

प्रश्न क्र. ३. नीचे लिखे परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए। **(५)**

पुव्विं पि य णं देवाणुप्पिया! अम्हं एयंसि दारगंसि गब्भं वक्कतंसि समाणंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था, जप्पभिइं च णं अम्हं एस दारए कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कंते तप्पभिइं च णं अम्हे हिरण्णेणं वड्ढामो, सुवण्णेणं वड्ढामो, धणेणं धन्नेणं जाव सावएज्जेणं पीइ-सक्कारेणं अईव अईव अभिवड्ढामो, सामंत-रायाणो वसमागया य, तं जया णं अम्हं एस दारए जाए भविस्सइ, तया णं अम्हे एयस्स दारगस्स इमं एयाणुरूवं गोण्णं गुणणिप्फन्नं णामधिज्जं करिस्सामो 'वद्धमाणु' त्ति। ता अज्ज अम्हं मणोरह-संपत्ती जाया, तं होउ णं अम्हं कुमारे वद्धमाणे णामेणं।

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथाओं का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए। **(१०)**

१. गढिए मिहुकहासु, समयंमि, णायसुए विसोगे अदक्खु।
एयाइं से उरालाइं, गच्छइ णायपुत्ते असरणयाए।।
२. अदु कुचरा उवचरंति, गामरक्खा य सत्तिहत्था य।
अदु गामिया उवसग्गा, इत्थी एगइया पुरिसा य।।
३. उच्चालइय णिहणिंसु, अदुवा आसणाओ खलइंसु।
वोसट्ठकाए पणयासी, दुक्खसहे भगवं अपडिण्णे।।

P.T.O

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. 'उवहाण सुयं' के चतुर्थ उद्देशक का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

२. शक्रेंद्र ने भगवान को किस पाठ से वंदन किया और क्यों?

(खण्ड ख – संस्कृत निबन्ध)

प्रश्न क्र. ६. किसी १ विषय पर संस्कृत में निबन्ध लिखिए। (शब्द मर्यादा–१५० से २००) **(१५)**

१. आत्मनः स्वरूपं जैनागमे कीदृशं?

२. श्रावकधर्मस्य उपयोगीता

३. समयस्य महत्ता

प्रश्न क्र. ७. सूचना –निम्नलिखितं परिच्छेदं पठित्वा सूचनानुसारेण उत्तराणि लिखेयुः। **(१५)**

आचार्यः – परमात्मा एतं मार्गमेव उपदिशति। अपेक्षारूपा डाकिनी सर्वान् पीडयति। अतः तस्याः उत्पत्तिस्थानं गवेषणीयम्। परमात्मा एव बोधयति यद् रागद्वेष–क्रोधमानमायालोभेर्ष्याकामादयः ये दोषाः आत्मनि स्थिताः तेषां कारणतः अपेक्षाः जायमानाः सन्ति। सर्वेऽपि जनाः तासाम् अपेक्षाणां कारणतः दुःखिताः भवन्ति, ताश्च पूर्णीकर्तुम् आदिनम्–आजीवनं भृशं प्रधावन्ति। तत्र च यथा–कथंचिदेकाम् अपेक्षां पूर्णीकुर्युः, तत्र अन्या ततोऽपि अधिका उत्थिता स्यादेव अतएव अपेक्षापूर्तिविषयेऽपि वस्तुतः मनसि या प्रक्रिया भवति तां गंभीरं चिन्तयतु भवान्। उदाहरणतः अधुना भवान् लक्षपञ्चकमूल्ये गृहे सुखेन निवसति। मनसि अपेक्षा जाता यद् पञ्चविंशतिलक्षमूल्ये महालये वस्तव्यम्। अनुक्षणं मनः चिन्ताग्रस्तं तु जातमेव। अधुना अपेक्षापूर्त्यै भवान् प्रयतितवान्। अपेक्षा पूर्णा, भवान् तथाकथितमहालये वस्तुमागतः। भवान् एवं मन्यते यद् मम सुखं वृद्धं, किन्तु वस्तुतः अधुना मनः इतोऽपि अधिकतया अपेक्षाग्रस्तं भविष्यति। दैवयोगात् संपत्तिः नष्टा। पुनः भवान् पुरातने पञ्चलक्षमूल्ये गृहे आगतः। यावान् सुखानुभवः पूर्वमासीत् तावानधुना स्यात्किम्? यदि न, तर्हि किमर्थम्? पञ्चलक्षमूल्यं गृहं तु तथा एव यथा पूर्वम्। तर्हि सुखं केन न्यूनीकृतम्? कथयतु पञ्चविंशति–लक्षमूल्यः महालयः एव अधुनातनस्य दुःखस्य कारणम्।

किञ्च, अपेक्षापूर्तौ तात्कालिकी सुखानुभूतिः भासेत किन्तु परिणामे तु वृद्धिंगता अपेक्षा तीव्रा भवति। ततश्च मनसः अधिकखिन्नताकारणतः दुःखमपि वर्द्धेत एव। एकमेव उदाहरणं पर्याप्तमस्मिन् विषये – अस्ति कश्चिद् ज्वरी। गतः चिकित्सकपार्श्वे। दर्शितं शरीरम्, स कथितवान् १ अंश (Degree) मितः ज्वरः अस्ति।

रोगी – अत्र किं कर्तुं शक्यते?

चिकित्सकः – अस्ति मम पार्श्वे गुलिका, या ज्वरं नाशयिष्यति। किन्तु घण्टाचतुष्कानन्तरं ज्वरः २ अंशमितः भविष्यति।

अनुक्षणं रोगी पृष्टवान् – ततः किम्?

चिकित्सकः प्रत्युत्तरं दत्तवान् – चिन्ता मास्तु, मम पार्श्वे तादृशी अपि गुलिका अस्ति यया स ज्वरः नंक्ष्यति। केवलं घण्टाचतुष्कानन्तरं ज्वरः ३ अंशमितः भविष्यति। एवं क्रमशः ज्वरवृद्धौ गुलिकाः तु सन्ति किन्तु एकदा तादृशी स्थितिः स्यात् यदा मम पार्श्वे गुलिका न स्यात्। भवता च मृत्युः सम्मुखीकर्तव्यः स्यात्। अथ भवान् एव वदतु यद्, भवान् एतादृशस्य चिकित्सकस्य पार्श्वे गच्छेदुत न?

P.T.O

शिष्यः – नैव। कदापि न म।

आचार्यः – सुन्दरम्, अधुना अवगच्छतु भवान् यद् अपेक्षापूर्तेः मार्गः अपि तच्चिकित्सकचिकित्सास्वीकार-सदृश एव। क्रमशः अपेक्षाः वर्द्धेरन् सर्वाः पूर्णाः न भवेयुः तेन सदा सर्वदा मनः खिन्नतामेव अनुभवेत्। एवमेव संपूर्णस्य जीवनस्य पूर्णाहुतौ का बुद्धिमत्ता? किं वा सुखम्? अतएव कथ्यते यद् सुखप्राप्त्यर्थम् अपेक्षाः न्यूनीकर्तव्याः, दूरीकर्तव्याः। तदर्थं च अनिवार्यतया रागादयः ये दोषाः सन्ति ते नाशनीयाः।

सूचना – एकस्मिन् शब्दे उत्तराणि लिखेयुः। **(५)**

१. सर्वेऽपि जनाः कस्मात् कारणतः दुःखिताः भवन्ति?

२. आत्मनि स्थितदोषाणां कारणतः काः जायमानाः?

३. अपेक्षापूर्तौ कियत् कालं सुखानुभूतिः भासेत?

४. रागादयः दोषाः कथं नाशनीयाः?

५. का डाकिनी सर्वान् पीडयति?

सूचना – निम्नलिखित पदानां सन्धिविच्छेदं कृत्वा सन्धिनामं लिखेयुः। **(५)**

१. तच्चिकित्सकः २. खिन्नतामेव ३. गच्छेदूत

४. प्रत्युत्तरं ५. लोभेर्ष्या

सूचना – व्याकरणानुसारेण उत्तराणि लिखेयुः। **(५)**

१. 'संपत्तिः' अस्मिन् शब्दे कः उपसर्गः, कः धातुः, कः च प्रत्ययः?

२. 'बुद्धिमत्ता' अस्मिन् शब्दे का प्रकृतिः, कः च प्रत्ययः?

३. 'गवेषणीयम्' अस्मिन् शब्दे कः धातुः, कः च प्रत्ययः?

४. 'वस्तव्यम्' अस्मिन् शब्दे कः धातुः, कः च प्रत्ययः?

५. 'वृद्ध' अस्मिन् शब्दे कः धातुः, कः च प्रत्ययः?

(खण्ड ग – प्राकृत निबन्ध)

प्रश्न क्र. ८. किसी १ विषय पर प्राकृत में निबन्ध लिखिए। (शब्द मर्यादा–१५० से २००) **(१५)**

१. अप्पा कत्ता विकत्ता य।

२. मित्ती मे सव्वभूएसु।

३. संजमो खलु जीवनं।

प्रश्न क्र.९. सूयणा – अहोलिहिअं निबन्धं पढिऊण पण्हाणां उत्तराणि लिहउ। **(१५)**

तत्थ य 'तिविहं कहावत्थुं' त्ति पुव्वायरियपवाओ। तं जहा – दिव्वं, दिव्वमाणुसं, माणुसं च। तत्थ दिव्वं नाम, जत्थ केवलमेव देवचरिअं वण्णिज्जइ। दिव्वमाणुसं पुण, जत्थ दोण्हं पि दिव्वमाणुसाणं। माणुसं तु, जत्थ केवल माणुसचरियं त्ति। एत्थ सामन्नओ चत्तारि कहाओ हवन्ति। तं जहा – अत्थकहा, कामकहा, धम्मकहा, संकिण्णकहा य। तत्थ अत्थकहा नाम, जा अत्थोवायाणपडिबद्धा, असि–मसि–कसि, वाणिज्ज–सिप्पसंगया, विचित्तधाउवायाइपमुहमहोवाय संपउत्ता, साम–भेयउप्पयाण–दण्डाइपयत्थविरइआ सा अत्थकह त्ति भण्णइ। जा उण कामो–वायाणविसया, वित्त–वपु–व्वय–कला–दक्खिण्ण परिगया, अणुरायपुलइ–अपडिवत्तिजोअसारा, दूईवावार, रमियभावाणुवत्तणाइपयत्थसंगया सा कामकह त्ति भण्णइ। जा उण धम्मोवायाणगोयरा, खमा–मद्दवऽज्जव–मुत्ति–तव–संजम–सच्च–सोया– ऽकिंचन–बंभचेर पहाणा,

P.T.O

अणुव्वय-दिसि-देसाऽणत्थ-दण्डविरइ-सामाइय-पोसहोववासोवभोग-परिभोगऽतिहिसंविभाग कलिया, अणुकम्पाऽकामनिज्जराइ पयत्थसंपउत्ता सा धम्मकह त्ति। जा उण तिविग्गोवायाणसंबद्धा, कव्व-कहा-गन्थत्थमवित्थरविरइया, लोइय- वेय-समयपसिद्धा, उयाहरण हेउ-कारणोववेया सा संकिण्णकह त्ति वुच्चइ।

एयाणं च कहाणं तिविहा सोयारो हवन्ति। तं जहा-अहमा, मज्झिमा उत्तम त्ति। तत्थ जे कोह-माण-माया-लोह-समाच्छाइयमई, परलोयदंसण परंमुहा, इहलोगपरमत्थदंसिणो, निरणुकम्पा जीवेसु, ते तहाविहा तामसा अहमपुरिसा दुग्गइगमणकन्दुज्जयाए, सुगइपडिवक्खभूयाए, परमत्थओ अणत्थबहुलाए, अत्थकहाए अणुसज्जन्ति। ते उण सद्दाइविसयविस-मोहियमणा, भावरिउ, इन्दियाणुकूलवत्तिणो अभावियपरमत्थमग्गा 'इमं सुन्दरं, इमं सुन्दरयरं' त्ति सुन्दरासुन्दरेसु अवणिमि ते रायसा मज्झिमपुरिसा बहुजणोवहसणिज्जाए विडम्बणमेत्तपडिबद्धाए, इह परभवे य दुक्ख संवडियाए कामकहाए अणुसज्जन्ति। जे उण मणगं सुन्दरयरा, सावेक्खा उभय लोएसु, कुसला ववहारनयमएणं, परमत्थओ सारविन्नाणरहिया, खुद्दभोएसु अबहुमाणिणो, अवियण्हा उदारभोगाणं, ते किंचि सत्तिया मज्झिमपुरिसा चेव आसयवसेसओ सुगइ दुग्गइवत्तिणीए, जीव-लोगसभाववविनब्भमाए, सयलरसनीसन्दसंगयाए, विविहभावपसूइनिबन्धणाए संकिण्णकहाए अणुसज्जन्ति। जे उण जाइ-जरा-मरणजणियवेरग्गा, जम्मन्तरम्मि वि कुसल भाविअमई, निव्विण्णा काम-भोगाण, मुक्कपाया पावलेवेण, विन्नायपरमपयसरूवा, आसन्ना सिद्धि-संपत्तीए, ते सत्तिया उत्तमपुरिसा सग्ग-निव्वाणसमारुहणवत्तिणीए, बहुजणपसंसणिज्जाए, सयलकहासुन्दराए, महापुरिससेवियाए धम्मकहाए चेव अणुसज्जन्ति।

सूयणा – एगे सद्दे पण्हाणां उत्तराणि लिहउ। **(५)**

१. पुव्वायरियपवाओ कइविहं कहावत्थुं पण्णत्तं?
२. उत्तमपुरिसा कम्हि चेव अणुसज्जन्ति?
३. सामन्नओ कइविहा कहाओ हवन्ति?
४. कहाणं सोयारो कइविहा हवन्ति?
५. तिविग्गोवायाणसंबद्धा कहा का?

सूयणा – एयं कस्स लक्खणं अत्थि लिहउ। **(५)**

१. अणुकम्पाऽकामनिज्जराइ पयत्थसंपउत्ता सा
२. जत्थ केवलमेव देवचरिअं वण्णिज्जइ
३. जाइ-जरा-मरणजणियवेरग्गा
४. सुन्दरासुन्दरेसु अवणिमि ते
५. जा अत्थोवायाणपडिबद्धा

सूयणा – इमाण कए पाइयभासाए को सद्दो अत्थि निबंधाओ चिणिऊण लिहउ। **(५)**

१. अपेक्षा से युक्त
२. दूसरे जन्म में
३. दूतीव्यापार
४. भावशत्रु
५. ग्रन्थार्थ

॥ ॐ अर्हन्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **प्रथम खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

प्रज्ञापना सूत्र

प्रश्न १. अ. निम्नलिखित जीवों में कितने उपयोग होते हैं, लिखिए। **(५)**

१. नैरयिक २. मनुष्य ३. द्वीन्द्रिय

४. पृथ्वीकाय ५. ज्योतिष्क देव

ब. एक शब्द में जवाब लिखिए। **(५)**

१. देवता में सबसे कम कौन-सी संज्ञा होती है?

२. मनुष्य में सबसे अधिक कौन-सी संज्ञा होती है?

३. तिर्यंच में सबसे कम कौन-सी संज्ञा होती है?

४. नारकी में सबसे अधिक कौन-सी संज्ञा होती है?

५. तिर्यंच में सबसे अधिक कौन-सी संज्ञा होती है?

क. जोड लगाइए। **(५)**

जीव	**श्वासोच्छ्वास**
१. असुरकुमार	अ. १४ पक्ष
२. ज्योतिष्क	ब. ७ स्तोक
३. सनत्कुमार	क. २१ पक्ष
४. महाशुक्र	ड. ७ पक्ष
५. आरणकल्प	इ. मुहूर्त पृथक्त्व

ड. निम्नलिखित जीव आहारक है या अनाहारक, लिखिए। **(५)**

१. सम्यग्दृष्टि २. मनोयोगी ३. अवधिज्ञानी तिर्यंच पंचेन्द्रिय

४. कार्मण शरीरी ५. नोसंयत-नोअसंयत-नो संयतासंयत

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. कषाय २. प्रयोग ३. अवधिज्ञान

४. समुद्घात ५. संज्ञा ६. योनि

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. पर्याप्त नारक पर्याप्त नारक रूप में कितने काल तक रहता है?

२. सकायिक जीव सकायिक रूप में कितने काल तक रहता है?

३. अवेदक अवेदक रूप में कितने काल तक रहता है?

४. अवधिदर्शनी अवधिदर्शनी रूप में कितने काल तक रहता है?

P.T.O

५. सूक्ष्म जीव सूक्ष्म रूप में कितने काल तक रहता है?

६. पद्मलेश्यावान् जीव पद्मलेश्या वाला कितने काल तक रहता है?

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(३०)**

१. ज्ञानावरणीय कर्म के अनुभाव को विस्तार से समझाइए।

२. परिचारणा पद का सार अपनी भाषा में लिखिए।

३. चौबीस दण्डकवर्ती जीवों की शीत, उष्ण और शीतोष्ण योनियों की दृष्टि से प्ररूपणा करके उसके अल्पबहुत्व को स्पष्ट कीजिए।

४. स्थान पद के आधार से सिद्ध का निरूपण कीजिए।

५. असत्यामृषा भाषा के प्रकारों को संक्षेप में समझाइए।

६. विविध लेश्याविशिष्ट समुच्चय देवों के अल्पबहुत्व को समझाइए।

७. चौबीस दण्डकवर्ती जीवों में कितने समुद्घात कहे हैं? क्यों?

प्रश्न ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. निम्न द्वारों के आधार से वैक्रिय शरीर की प्ररूपणा कीजिए।

अ. विधि ब. संस्थान क. प्रमाण

२. व्युत्क्रान्तिपद में आए 'कुतो' द्वार की विस्तृत प्ररूपणा कीजिए।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. दर्शनार्य के स्वरूप को विस्तार से समझाइए।

२. चौबीस दण्डकों की अतीत, बद्ध और पुरस्कृत द्रव्येन्द्रियों की प्ररूपणा कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **प्रथम खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – योगदर्शन तथा योगविंशिका)

प्रश्न १. अ. उचित पर्याय को चुनकर लिखिए। **(५)**

१. भगवान पतञ्जलि ने ..... निरोध को योग कहा है। (चित्तवृत्ति, अचित्तवृत्ति, प्रवृत्ति)

२. योग ..... मार्ग का नाम है। (ज्ञान, भक्ति, क्रिया)

३. योगशास्त्र के पहले पाद का नाम ..... है। (विभूति, साधन, समाधि)

४. ..... को जैनशास्त्र में मिथ्यात्व कहते हैं। (अस्मिता, अविद्या, आरोप)

५. योग का मतलब मोक्ष के कारणभूत ..... व्यापार है। (आत्म, कर्म, स्थान)

ब. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तंभ	**'ब' स्तंभ**
१. भवदेव	अ. बीजक ग्रन्थ
२. कबीर	ब. योगविंशिका
३. सुहीरोबा	क. योगनिबन्ध
४. हरिभद्रसुरि	ड. ज्ञानेश्वरी
५. ज्ञानदेव	इ. सिद्धान्त संहिता

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. हरिभद्रसुरि का साहित्य के क्षेत्र में योगदान क्या रहा, लिखिए।

२. आर्यजाति का असाधारण लक्षण क्या हैं?

३. हठयोग के किन्हीं चार ग्रन्थों के नाम लिखिए।

४. योगशास्त्र को चतुर्व्यूहात्मक क्यों कहा हैं?

५. योगशास्त्र और जैनदर्शन का सादृश्य कितने और कौन-से प्रकार का है?

६. योगविंशिका का महत्त्व संक्षेप में लिखिए।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सूत्रों /गाथाओं का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए। **(१५)**

१. भवप्रत्ययो विदेह प्रकृतिलयानाम्।

२. विशेषाविशेषलिङ्गमात्रालिङ्गानि गुणपर्वाणि।

३. अतीतानागतं स्वरूपतोऽस्त्यध्वभेदाद्धर्माणाम्।

४. देसे सव्वे य तहा, नियमेणेसो चरित्तिणो होइ।
इयस्स बीयमित्तं, इत्तुच्चिय केइ इच्छंति।।

P.T.O

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. योगदर्शन के चतुर्थ पाद का वर्णन कीजिए।

२. योग को पराकाष्ठा तक पहुंचाने का श्रेय किसे मिला?

(खण्ड ख – ध्यानशतक)

प्रश्न ५. अ. सही है या गलत, बताइए। **(५)**

१. जैन दर्शन में योग शब्द 'मन–वचन–काय की प्रवृत्ति' अर्थ में रूढ हुआ है।

२. सामान्यतया क्रुरतायुक्त चिंतन व कार्य आर्तध्यान है।

३. तत्त्वार्थ श्रद्धा शुक्लध्यानी की पहचान है।

४. उपदेश दो प्रकार से ग्रहण किया जाता है।

५. अशुभत्व का विचार अशुभानुप्रेक्षा है।

ब. एक शब्द में जवाब दीजिए। **(५)**

१. शुक्लध्यान किससे सूक्ष्मतर है?

२. आर्तध्यान और रौद्रध्यान से कर्मों का क्या होता है?

३. रौद्रध्यानी के अतिसंक्लिष्ट क्या होते हैं?

४. ध्यान निर्जरा तत्त्व का कितवां भेद है?

५. कर्म के परिपाक से होनेवाले फल को क्या कहते हैं?

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. चित्त को स्थिर करने में कौन–कौन सहायक हैं?

२. विषय की व्याख्या लिखते हुए विषय कितने और कौन–कौन से हैं?

३. आमरण दोष क्या है?

४. ध्यान का लक्ष्य क्या है?

५. परिवर्तना क्या है? स्पष्ट कीजिए।

६. एकत्वानुप्रेक्षा का अर्थ क्या है?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब दीजिए। **(१५)**

१. धर्मध्यान का विवेचन कितने द्वारों में किया गया है?

२. बौद्ध पालि साहित्यानुसार ध्यान के कितने प्रकार बताये हैं?

३. मुनि आर्तध्यान क्यों नहीं करता? स्पष्ट कीजिए।

४. उपदेश रुचि क्या है? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब दीजिए। **(१५)**

१. आज्ञाविचय और अपायविचय के स्वरूप को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

२. रौद्रध्यान के भेदों को समझाइए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **प्रथम खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

सूत्रकृतांग सूत्र

प्रश्न १. अ. निम्नलिखित कौन–सा क्रियास्थान है, लिखिए। **(५)**

१. निरर्थक ही विविध प्रकार से प्राणहिंसा करना।

२. मन, वचन या काया से असत्याचरण करना।

३. समस्त सूक्ष्म क्रियाएं उपयोग पूर्वक करना।

४. स्वयं को उत्कृष्ट मानना।

५. अदण्डनीय को भ्रम से दण्डनीय समझकर दण्ड देना।

ब. निम्नलिखित लोकोत्तर धर्म के आचारसूत्र से संबंधित सवालों के जवाब एक शब्द में लिखिए।(५)

१. अकारण किसके घर में न बैठे?

२. किसके चरणों में रहकर आर्य धर्म सिखें?

३. साधुचर्या में कैसे रहे?

४. कैसे शब्दादि में आसक्त न रहे?

५. परीषह से पीडित होने पर उन्हें कैसे सहे?

क. निम्नलिखित उपमा किस परीषह/उपसर्ग को दी है, लिखिए। **(५)**

१. थोडे–से जल में मछली

२. संग्राम में डरपोक लोग

३. जाल में फंसी हुई मछली तडफती है

४. अग्नि के स्पर्श से आर्तध्यानयुक्त प्राणी

५. रुष्ट होकर घर से भागनेवाली स्त्री स्वजनवर्ग को स्मरण करती है

ड. अंकों में जवाब लिखिए। **(५)**

१. समवशरण के कितने भेद हैं?

२. क्रियास्थान कितने हैं?

३. दूसरे श्रुतस्कन्ध के कितने अध्ययन हैं?

४. बौद्ध ग्रन्थ मान्य स्कन्ध कितने हैं?

५. लोकायतिक द्वारा मान्य महाभूत कितने हैं?

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ गाथाओं का अर्थ लिखिए। **(१०)**

१. णीवारमेय बुज्झेज्जा, णो इच्छे अगारमागंतुं।
बद्धे य विसयपासेहिं, मोहमागच्छती पुणो मंदे।।

P.T.O

२. सोच्चा य धम्मं अरहंतभासियं, समाहितं अट्ठपओवसुद्धं।
तं सद्दहंणा य जणा अणाऊ, इंदा व देवाहिव आगमिस्संति।।

३. जातीवहं अणुपरियट्टमाणे, तस-थावरेहिं विणिघायमेति।
से जाति-जाती बहूकूरकम्मे, जं कुव्वती मिज्जति तेण बाले।।

४. एयमट्ठं सपेहाए, परमट्ठाणुगामियं।
निम्ममो निरहंकारो, चरे भिक्खू जिणाहितं।।

५. तं मग्गं अणुत्तरं सुद्धं, सव्वदुक्खविमोक्खणं।
जाणासि णं जहा भिक्खू, तं णे बूहि महामुणी।।

६. समेच्च लोगं तस-थावराणं, खेमंकरे समणे माहणे वा।
आइक्खमाणो वि सहस्समज्झे, एगंतयं साहयति तहच्चे।।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. लोक और अलोक के विषय में अन्यतीर्थिक का क्या मंतव्य है?

२. पुण्य और पाप के विषय में अन्यतीर्थिक का क्या मंतव्य है?

३. चातुर्गतिक संसार के विषय में अन्यतीर्थिक का क्या मंतव्य है?

४. साधु और असाधु के विषय में अन्यतीर्थिक का क्या मंतव्य है?

५. वेदना और निर्जरा के विषय में अन्यतीर्थिक का क्या मंतव्य है?

६. बन्ध और मोक्ष के विषय में अन्यतीर्थिक का क्या मंतव्य है?

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(३०)**

१. आर्द्रकमुनि द्वारा हस्तितापसों की मान्यता के निराकरण को स्पष्ट कीजिए।

२. अप्रत्याख्यानी आत्मा के स्वरूप और प्रकार को विस्तार से समझाइए।

३. कर्मबन्धन से विमुक्त साधक कौन और कैसा होता है?

४. ग्रन्थ के आधार से एकान्त विनयवादी की समीक्षा अपनी भाषा में कीजिए।

५. उपसर्ग विजेता साधु कैसा होता है, स्पष्ट कीजिए।

६. वैतालीय अध्ययन के आधार से अशरण भावना का निरूपण कीजिए।

७. विविध उपमाओं से भगवान महावीर की श्रेष्ठता का निरूपण कीजिए।

प्रश्न ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. ग्रन्थ के आधार से एकान्त रूप में सिर्फ नियति को मानना दोषयुक्त है या नहीं, समझाइए।

२. सूत्रकृतांग सूत्र के पंचम अध्ययन का सार अपनी भाषा में लिखिए।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. गुरुकुलवासी साधु द्वारा शिक्षा ग्रहण विधि का निरूपण कीजिए।

२. श्रमणोपासक के प्रत्याख्यान की सविषयता की सिद्धि कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **प्रथम खण्डे चतुर्थ पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

शास्त्रवार्ता समुच्चय

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत लिखिए। **(५)**

१. एक वस्तु अपनी समकालीन किसी दूसरी वस्तु का उपकार नहीं कर सकती।
२. जैन दर्शनानुसार एक वस्तु भावरूप तथा अभावरूप दोनों हुआ करती है।
३. अकेले अकेले तत्त्व किसी भी कार्य को जन्म देते पाये जाते हैं।
४. 'क्षयोपशम' बौद्ध शास्त्र का एक पारिभाषिक शब्द है।
५. पूर्वजन्म की स्मृति एक लोक स्वीकृत बात है।

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित सवालों के जवाब एक शब्द में लिखिए। **(५)**

१. एक दार्शनिक किसको वस्तु–तत्त्व की कसौटी के रूप में प्रस्तुत करेगा?
२. प्रत्येक प्रमाता तथा प्रमेय नाश के साथ किससे सम्पन्न है?
३. पूर्णक्षण मे रहने वाला अंशहीन धर्मी क्या कहलाता है?
४. जन्म आदि रहित मोक्ष का कारण क्या है?
५. केवल शब्द का अर्थ क्या है?

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित समूह का चौथा पद लिखिए। **(५)**

१. अन्वय, व्यतिरेक, स्थिरता, ...
२. प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, ...
३. ग्राह्य, ग्राहक, उभय, ...
४. ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, ...
५. पृथ्वी, जल, तेज, ...

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित मान्यता किस दर्शन की है, बताइए। **(५)**

१. जगत् के चेतन भाग का निर्माण अनंतसंख्यक आत्माएं करती है।
२. शब्द एक स्वतंत्र प्रकार का भौतिक पदार्थ है।
३. समूचा जड जगत् प्रकृति के रूपान्तरण मात्र है।
४. चेतनत्व को मन नाम से जानना।
५. आत्मा की सत्ता कहीं नहीं है।

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ पदों की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. कर्म–प्रकृति २. सामान्य ३. स्याद्वाद
४. कर्ता ५. रूप ६. धर्म

P.T.O

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित किन्ही ५ सवालों के संक्षेप में जवाब दीजिए। **(१०)**

१. एक धर्म वस्तु में रहता भी है और नहीं भी रहता इस मान्यता में कितने दोष बताये हैं? कौन-से?

२. भयानक संसारसागर में कितने उपद्रव बताये गये हैं? कौन-से?

३. स्वभाव शब्द की व्युत्पत्ति और उसका वास्तविक अर्थ क्या है?

४. वस्तुस्वरूप के अवस्थायिता पहलू को क्या-क्या कहते हैं?

५. ईश्वर की कितनी बातें अप्रतिहत है और कौन-सी?

६. जैन परंपरा में लोक कितने हैं और कौन-से?

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब ग्रंथ के आधार पर अपने शब्दों में लिखिए। **(३०)**

१. सांख्यों के प्रकृति की तुलना जैनदर्शन के किससे की गई है यह बताकर वह सही है या गलत लिखिए।

२. सर्वज्ञ व्यक्ति प्रतिभा की सहायता से अतीन्द्रिय पदार्थों को कैसे जान सकता है, सिद्ध कीजिए।

३. जैन परंपरा में मोक्ष में अनिवार्य कारण कौन-से बताए गए हैं? उनका स्वरूप लिखिए।

४. दर्शन मोक्ष का बीज कैसे हैं? अपनी भाषा में लिखिए।

५. अर्थक्रियाकारित्व का स्वरूप अपने शब्दों में लिखिए।

६. विज्ञानाद्वैतवादी की मान्यता स्पष्ट कीजिए।

७. ईश्वर जगत्कर्ता है या नहीं, सिद्ध कीजिए।

८. पांच वादों का स्वरूप संक्षेप में लिखिए।

प्रश्न क्र. ८. किसी १ सवाल का जबाब सयुक्तिक लिखिए। **(१५)**

१. ज्ञान से भिन्न बाह्य पदार्थ का अस्तित्व है या नहीं सयुक्तिक लिखिए।

२. स्याद्वाद से पदार्थ नित्य है या अनित्य? सयुक्तिक सिद्ध कीजिए।

प्रश्न क्र. ९. किसी १ सवाल का जवाब अपनी भाषा में लिखिए। **(१५)**

१. मुक्ति सिर्फ ज्ञान से मिलती है, सिर्फ क्रिया से मिलती है या दोनों से अपने शब्दों में लिखिए।

२. भूतचैतन्यवाद की मान्यता का खंडन करके अपनी मान्यता सिद्ध कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **द्वितीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

अनुयोगद्वार सूत्र

प्रश्न १. निम्नलिखित कौन–सा समास है, लिखिए। **(५)**

१. कृष्णमृग २. पुण्यपाप ३. तीर्थकाक
४. अनुग्रामम् ५. त्रिगुण

प्रश्न २. निम्नलिखित के कितने भेद हैं, लिखिए। **(५)**

१. ओघनिष्पन्ननिक्षेप २. अद्धापल्योपम ३. स्पर्शनाम
४. नोइन्द्रियप्रत्यक्ष ५. गणनासंख्या

प्रश्न ३. जोड लगाइए। **(५)**

अ स्तम्भ		**ब स्तम्भ**
१. निर्गम	–	अ. संयतिभाव की सिद्धि के लिए
२. कारण	–	ब. सर्वविरति के शतपृथक्त्व
३. भव	–	क. सामायिक
४. आकर्ष	–	ड. अर्थत: तीर्थंकरों से
५. निर्देश	–	इ. श्रुतसामायिक अनन्तकाल तक

प्रश्न ४. निम्नलिखित का कोई १ उदाहरण लिखिए। **(५)**

जैसे – सचित्त लौकिक आय – आम

१. असद्–असद्रूप औपम्यसंख्या २. अचित लौकिक आय
३. सादिपारिणामिक भाव ४. नोआगमज्ञायक शरीर आवश्यक
५. मिश्र द्रव्य स्कन्ध

प्रश्न ५. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ की परिभाषा लिखिए। **(६)**

१. उपक्रम २. निक्षेप ३. अनुगम ४. नय

प्रश्न ५. ब. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथा का भावार्थ लिखिए। **(४)**

१. जहा दीवा दीवासतं पइप्पए, दिप्पए य सो दीवो।
दीवसमा आयरिया दिप्पंति, परं च दीवेंति।।

२. जह मम ण पियं दुक्खं जाणिय एमेव सव्वजीवाणं।
न हणइ न हणावेइ य सममणती तेण सो समणो।।

३. णक्खत्त–देवय–कुले पासंड–गणे य जीवियाहेउं।

P.T.O

आभिप्पाउयणामे ठवणानामं तु सत्तविहं।।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. 'आघविज्जति' को उदाहरण से स्पष्ट कीजिए।

२. 'पण्णविज्जति' को उदाहरण से स्पष्ट कीजिए।

३. 'परूविज्जति' को उदाहरण से स्पष्ट कीजिए।

४. 'दंसिज्जति' को उदाहरण से स्पष्ट कीजिए।

५. 'निदंसिज्जति' को उदाहरण से स्पष्ट कीजिए।

६. 'उवदंसिज्जति' को उदाहरण से स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(३०)**

१. व्याख्या करने की विधि को स्पष्ट कीजिए।

२. स्कन्ध किसे कहते हैं? भावस्कन्ध के पर्यायवाची नामों की सार्थकता समझाइए।

३. गीतगायक की योग्यता का निरूपण कीजिए।

४. आत्मांगुल के स्वरूप का प्रतिपादन कीजिए।

५. प्रदेशदृष्टान्त द्वारा नयों के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

६. ग्रन्थ के आधार पर श्रमण की उपमाओं पर प्रकाश डालिए।

७. बद्ध–मुक्त तेजस्शरीर का परिमाण सकारण स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तृत जवाब लिखिए। **(१५)**

१. बत्तीस आगमों में अनुयोगद्वार सूत्र के स्थान और महत्त्व का अपनी भाषा में निरूपण कीजिए।

२. नवनाम के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ९. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. अनुमान प्रमाण के स्वरूप को विस्तार से समझाइए।

२. श्रुत निक्षेप पर प्रकाश डालिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **द्वितीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

भगवती सूत्र – शतक १ से १४

प्रश्न १. एक शब्द में जबाब लिखिए। (५)

१. स्कन्धक ने स्थविरों से कितने अंगों का अध्ययन किया?

२. शिवराजर्षि को कौन-सा ज्ञान हुआ?

३. वर्तमान में ताम्रलिप्ती कहां है?

४. मायी कैसा होता है?

५. श्रावस्ती नगरी में कौन-सा उद्यान था?

प्रश्न २. अंकों में जबाब लिखिए। (५)

१. वैरोचनेन्द्र की कितनी अग्रमहिषियां हैं?

२. जमालि ने कितने लाख देकर रजोहरण मंगवाया?

३. छाद्मस्थिक समुद्घात कितने प्रकार का हैं?

४. अभिचिकुमार को देवलोक में कितने पल्योपम की आयु मिली?

५. वायुकाय में कितने शरीर हैं?

प्रश्न ३. उचित पर्याय चुनकर रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए। (५)

१. ..... अवस्था में सभी जीवों के उच्छ्वास और नि:श्वास होते हैं।
(पर्याप्त, अपर्याप्त, पर्याप्तापर्याप्त)

२. एकेन्द्रिय जीव ..... के अन्त भाग में भी होते हैं। (त्रसनाल, लोक, अलोक)

३. ..... तमस्काय कहलाता है। (पृथ्वी, पानी, अग्नि)

४. भूमि का बृहत् खण्ड ..... है। (देश, प्रदेश, परमाणु)

५. तेजस् शरीर प्रयोगबन्ध ..... जीवों के अनादि-अपर्यवसित होता है।
(अभव्य, भव्य, संसारी)

प्रश्न ४. जोड लगाइए। (५)

'अ' स्तंभ	**'ब' स्तंभ**
१. उत्पल जीव	अ. अभिचिकुमार
२. कुम्भिक	ब. माता के आर्तव का आहार
३. उदायन राजा	क. एकान्त मिथ्यादृष्टि
४. गर्भगत जीव	ड. पुष्पवतिक
५. तुंगिका नगरी	इ. उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व

P.T.O

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. द्रव्य लोक २. धारणा ३. सामानिक
४. वीचिद्रव्य ५. मूलगुण प्रत्याख्यान ६. नियंत्रित

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब संक्षेप में लिखिए। **(१०)**

१. एक स्थान पर सभी श्रमणोपासक मिलने के पीछे कौन-से रहस्य थे?
२. औदारिक पुद्गलपरिवर्त के कितनी और कौन-सी प्रक्रियाएं बतायी है?
३. असुरकुमार देवों की ऊर्ध्वगमन विषयक शक्ति कितनी हैं?
४. सामायिक में बैठे हुए श्रमणोपासक को कौन-सी क्रिया लगती है?
५. आजीविक मत में कितने आजीविकोपासक हैं? कौन-से?
६. नारक जीव कितने प्रकार के पुद्गलों की उदीरणा करते हैं?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(३०)**

१. पांच प्रकार के देवों के नाम बताते हुए व्याख्या लिखिए।
२. एकेन्द्रिय जीवों की विग्रहगति चार समय की कैसे होती है, स्पष्ट कीजिए।
३. व्याख्याप्रज्ञप्ति के और कौन-कौन से नाम हैं? स्पष्ट कीजिए।
४. चमरेन्द्र की सभाएं कितनी और कौन-सी हैं? व्याख्या लिखिए।
५. आयुष्यबंध के कितने प्रकार हैं? कौन-से? स्पष्ट कीजिए।
६. क्या विभंगज्ञान अवधिज्ञान में परिणत हो सकता है?

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब विस्तार से लिखिए। **(३०)**

१. उत्पल जीवों के ३२ द्वारों में से १५ द्वारों को स्पष्ट कीजिए।
२. व्याख्या प्रज्ञप्ति में रहे विषयों का वर्गीकरण कितने खण्डों में किया है? स्पष्ट कीजिए।
३. अस्तिकाय कितनी और कौन-सी हैं, स्पष्ट कीजिए।
४. छट्ठें आरे का वर्णन कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **द्वितीय खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२३ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – सन्मति तर्क प्रकरण)

प्रश्न १. उचित पर्याय को चुनकर लिखिए। **(५)**

१. राजा का चित्र या प्रतिकृति ..... राजा है। (नाम, स्थापना, द्रव्य)

२. ..... में तो सविकल्प, निर्विकल्प वचनमार्ग होता है।
(अर्थपर्याय, व्यंजन पर्याय, अर्थ–व्यंजन पर्याय)

३. ..... अमूर्त है। (आत्मा, कर्म, नय)

४. ज्ञान ..... पूर्वक होता है। (अवग्रह, सिद्धान्त, दर्शन)

५. संसारी जीव ..... निकाय के बताये गये हैं। (चार, पांच, छ)

प्रश्न २. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तंभ		**'ब' स्तंभ**
१. णिच्छयसुद्धं	–	अ. विभाग से उत्पन्न होनेवाला
२. परिच्छियाणं	–	ब. रूप, रस
३. विभागजायं	–	क. निश्चयदृष्टि
४. रूव–रस	–	ड. भवस्थ केवली
५. भवत्थ केवलि	–	इ. परीक्षकों के

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. क्या नय को मिथ्यादृष्टि कहें या सम्यग्दृष्टि? स्पष्ट कीजिए।

२. देशना क्या है? स्पष्ट कीजिए।

३. प्रतीत्यवचन क्या हैं?

४. एकान्त पक्ष में सुख–दुःख क्यों नहीं घट सकता?

५. दर्शन किसे कहते हैं?

६. उत्पाद के कितने प्रकार हैं? कौन–से?

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१५)**

१. जिनवचन की कुशल कामना करते हुए ग्रंथकार ने कौन–से तीन विशेषण दिए हैं?

२. केवलज्ञान सादि–अपर्यवसित है, सिद्धान्त के अनुसार स्पष्ट कीजिए।

३. पर्यायास्तिक नय की व्याख्या एवं उसके भेदों को स्पष्ट कीजिए।

४. ग्रंथकार का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

प्रश्न ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. अहेतुवाद, हेतुवाद आगम क्या है? स्पष्ट कीजिए।

P.T.O

२. निम्नलिखित गाथाओं का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए।

अ. तित्थयरवयण संगह-विसेस पत्थार मूलवागरणी।
दव्वट्ठिओ य पज्जवणओ य सेसा वियप्पसि।।

ब. भण्णइ विसमपरिणयं कह एयं होहिइ त्ति उवणीयं।
तं होइ परणिमित्तं ण व त्ति एत्थऽत्थि एगंतो।।

(खण्ड ख – जैन निबंधावली भाग २)

प्रश्न ६. निम्नलिखित सवालों के जवाब एक शब्द में दीजिए। **(५)**

१. आत्मारामजी म. सा. को बचपन में किसने संभाला?
२. प्रो. शिवाजीराव भोसले ने किसके साथ वकालत की?
३. आचार्य देवेन्द्रमुनिजी म. सा. के गुरु कौन थे?
४. काका कालेलकर का जन्म कहां हुआ?
५. आदर्शऋषिजी म. सा. ने भ. महावीर के जीवन पर कौन-सी किताब लिखी?

प्रश्न ७. उचित पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. ज्वर का तापमान ..... मीटर से लिया जाता है। (स्पिरिच्युओ, थर्मा, पेरा)
२. आत्मावादी दर्शन के केन्द्र में ..... तत्त्व हैं। (अचेतन, चेतन, जड)
३. नव्यन्याय के युग का प्रारंभ ..... से होता है। (गंगेश, विद्यानन्द, अकलंक)
४. यात्री के पास ..... है। (अन्न, धन, पाथेय)
५. शुक्ल लेश्या का वर्ण ..... होता है। (काला, सफेद, पीला)

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब संक्षेप में लिखिए। **(१०)**

१. अविचार भक्त प्रत्याख्यान की व्याख्या देते हुए भेदों के नाम लिखिए।
२. जैनियों के आचार संहिता के महत्त्वपूर्ण बिंदु कौन-से हैं?
३. दीपक सम्यक्त्वी किसे कहते हैं?
४. एकाग्रता किसे कहते हैं?
५. लाल रंग की विशेषताएं लिखिए।
६. स्याद्वाद या सापेक्षिक कथन की आवश्यकता के कारण लिखिए।

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. अनेकान्तवाद की व्यावहारिक उपादेयता के प्रमाणों को स्पष्ट कीजिए।
२. संलेखना की कोई पांच विशेषताएं बताइए।
३. जैन साधुओं का महत्त्व लिखिए।
४. द्रव्य लेश्या और भाव लेश्या को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. ईश्वर सर्व व्यापक नहीं है, इसे स्पष्ट कीजिए।
२. आगम युग को विस्तार से समझाइए।

॥ ॐ अर्हन्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५० **द्वितीय खण्डे चतुर्थ पत्रम्**

सन् २०२३ **समय: घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

विशेषावश्यकभाष्य

प्रश्न १. निम्न तक्ता लब्धियों के आधार पर पूर्ण कीजिए। **(१०)**

लब्धि	भवी पुरुष	भवी स्त्री	अभवी पुरुष	अभवी स्त्री
जैसे – वासुदेव	✓	×	×	×
१. अर्हन्त	.....	.....	.....	.....
२. जंघाचरण	.....	.....	.....	.....
३. क्षीरमध्वाश्रव	.....	.....	.....	.....
४. कोष्ठबुद्धि	.....	.....	.....	.....
५. आमर्ष औषधि	.....	.....	.....	.....

प्रश्न २. निम्नलिखित निह्नव कब हुए लिखिए। **(५)**

१. गोष्ठामाहिल २. आषाढाचार्य ३. गंगाचार्य
४. जमालि ५. तिष्यगुप्त

प्रश्न ३. निम्नलिखित के कोई २ भेद लिखिए। **(५)**

१. द्रव्यार्थिक नय २. श्रुतज्ञान ३. समाचारी
४. नो आगम द्रव्यावश्यक ५. अश्रुतनिश्रित मतिज्ञान

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. मन:पर्यवज्ञान २. मंगल ३. उपसंपदा
४. आचार्य ५. निर्देश दोष ६. ओघनिष्पन्न निक्षेप

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. क्या क्षायिक सम्यक्त्व क्षायोपशमिक सम्यक्त्व से ज्यादा शुद्ध है, उदाहरण से समझाइए।
२. सामायिक किसको होती है?
३. नमस्कार का व्याख्यान कितने और कौन-से द्वारों से किया गया है?
४. केवली भगवान समुद्घात क्यों करते हैं? और कब करते हैं?
५. मुक्तिसाधक साधु कैसे होते हैं?
६. नमस्कार की स्थिति कितने काल की है?

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(३०)**

१. अवधिज्ञान का जघन्य क्षेत्र कितना है? क्यों?

P.T.O

२. मन:पर्यवज्ञान की गति आदि द्वारों में सत्पदप्ररूपणा कीजिए।

३. निम्न गाथा का अर्थ विस्तार से समझाइए।

वंदामि महाभागं महामुणिं महायसं महावीरं।
अमर–नरायमहियं तित्थयरमिमस्स तित्थस्स।।

४. सामायिक के भेद–प्रभेदों को स्पष्ट समझाइए।

५. कितने और कौन–से कारणों से सामायिक होना मुश्किल है?

६. ग्रन्थ के आधार पर एवंभूत नय के स्वरूप का प्रतिपादन कीजिए।

७. 'भंते' शब्द किस तरह गुरु को वचनरूप से आमंत्रण है, स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. 'बंध और मोक्ष है या नहीं?' ऐसी शंका किस गणधर को थी? भगवान महावीर ने उसका समाधान कैसे किया, समझाइए।

२. ग्रन्थ के आधार से सामुच्छेदिक निह्नव का खंडन–मंडन रूप में निरूपण अपनी भाषा में कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का सटीक जवाब लिखिए। **(१५)**

१. 'मन से व्यंजनावग्रह होता है या नहीं?' इसको ग्रन्थ के आधार से स्पष्ट कीजिए।

२. अधिकाक्षर, हीनाक्षर और हीनाधिकाक्षर वाले श्रुत बोलने से दोष होता है, इन्हें उदाहरण द्वारा समझाइए।